मेरा सफ़र : मेरी दास्तान

[illegible]

–शमशेर सिंह सुरजेवाला

अक्षरधाम प्रकाशन

करनाल रोड,

कैथल–136027 **(हरियाणा)**

आत्मकथ्य

मित्रो!

मै कोई साहित्यिक व्यक्ति नही हूँ लेकिन गैर साहित्यिक भी नही हूँ। बचपन में कथा-कहानियां पढ़ने का शौक था जो बाद में सिनेमा की विधा के साथ फिल्में देखने के रूप में जुड़ गया। वैसे सिनेमा भी साहित्य की ही एक इकाई के रूप में काम करता है, जिसमें साहित्य के गद्य-पद्य के साथ सभी रस और भाव प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होते है। इस कथन से मेरे कई निकटस्थ साथी भी हैरान हो सकते है कि मै अपने व्यस्त समय में से कैसे सिनेदर्शन के लिए समय निकालता हूँ। खैर! चर्चा का विषय सिनेमा नही साहित्य है। साहित्यिक तौर पर मेरा सीधा जुड़ाव अखबार और मैगजीन (पत्रिकाओं) के साथ रहा है जो कॉलेज टाईम से लेकर आज तक भी बरकरार बना हुआ है। आज भी मै हिन्दी और अंग्रेजी के तीन-चार अखबार तथा इण्डिया टुडे पत्रिका का नियमित पाठक हूं। इन्ही में मै साहित्यिक टिप्पणियों और साहित्य की आबोहवा को जितना समझता-देखता आया हूं बस उतना ही मै साहित्यिक भी हूं। लेकिन कलम की ताकत, कलमकार और लेखकों के प्रति मै सदा सम्मानभाव रखता रहा। मुझे बड़ा अच्छा लगता है जब कोई लेखक रूढ़ियों, कुरीतियों और भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करता है। पर, इतना होने पर भी मै यह दावा कतई नही करता कि मै उस स्तर की साहित्यिक सोच रखता हूं कि मुझे एक पुस्तक लिख डालनी चाहिए।

ये तो बार-बार कुछ बुद्धिजीवी साथियों के आग्रह और अनुरोध करने पर मैने सोचा कि क्यूं ना ये प्रयोग रचनात्मकता के तौर पर करके देख लिया जाए और इस पर भी पूरा सहयोग प्रदान

कर उत्साह बढ़ाया मेरे पुत्र रणदीप ने। जिन्होंने इस कार्य के लिए सारी व्यवस्था को एक सुव्यवस्थित क्रम प्रदान किया।

तो मित्रो!

आखिर! मैंने अपने जीवन के सफर की दास्तान को अपने मन मे गुनगुनाने का कार्य शुरु किया तो लगा कि शायद बात कुछ बन जाये। अब बात बन पाई के नही बन पाई ये तो आप लोग, बुद्धिजीवी वर्ग, साहित्यिक सोच और जीवन सफर के पथिक आम जन-साधारण ही निर्धारित कर पाएंगे। अतः मेरा यह साधारण सा प्रयास अर्पित है आपके साथ, आपके हाथ.....

आपका

-शमशेर सिंह सुरजेवाला

सम्पादकीय

आदरणीय चौ. शमशेर सिंह सुरजेवाला एवं रणदीप सिंह सुरजेवाला हिन्दुस्तान की राजनीति में इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण है कि राजनीति को भी विनम्रता, सौम्यता, तहज़ीब और लियाकत के साथ संचालित किया जा सकता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, शरतचन्द्र, लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और गोपालकृष्ण गोखले सदैव इस विचार को प्रकट करते थे कि राजनीति में सभ्य, सौम्य, प्रबुद्ध और अच्छे चरित्र के लोगों को आना चाहिए। निश्चित रुप से सुरजेवाला परिवार की राजनीति राष्ट्र के इन महानायकों की इच्छा पर खरी उतरती है।

मेरा गांव और सुरजेवाला गांव भौगोलिक और भावनात्मक रूप से एक-दूसरे के पर्याय और पूरक है। उस पर भी मेरे परिवार का सम्बन्ध सुरजेवाला परिवार की प्रारम्भिक पीढ़ी से रहा है। मेरा ही क्यूं मेरे पूरे गांव का रहा है। इस नाते मैं सदैव एक भावनात्मक जुड़ाव महसूस करता रहा हूं इस परिवार के साथ। और हो भी क्यूं ना आखिर एक ही मिट्टी, पानी, आबो-हवा और आचार-विचार में तो पला है हम दोनों का गांव। इसी एकात्मक भाव से वशीभूत हो मैंने उनके जीवन को पुस्तकाकार में लिपिबद्ध करने के लिए सुरजेवाला साहब से अनुरोध किया ताकि आने वाली पीढ़ियां चाहे वो किसी गांव की हो, किसी शहर की हो, उनके जीवन संघर्षों से और आगे बढ़ते रहने की लगन से प्रेरणा लेकर राजनीति में या जीवन के किसी भी अन्य मुकाम तक निर्बाध रुप से पहुंच

सकें।

सुरजेवाला परिवार का नाम हरियाणा की राजनीति ही नहीं अपितु राष्ट्रीय राजनीति में एक अहम् योगदान रखता है। हिन्दुस्तान में किसानों के मसीहा कहलवाने वाले भले ही सैकड़ों की संख्या में हों। लेकिन किसान की दशा में जो आधारभूत सुधार के प्रयास शुरु हुए वो सुरजेवाला के उस प्रयास के बाद ही हुए जब उन्होंने किसानों की आत्महत्या के मुद्दे को बड़े जोर-शोर से उठाते हुए आदरणीय सोनिया गांधी जी को किसानों की विधवा पत्नियों, अनाथ बच्चों और उनकी बहनों से मिलवाया था। उसी प्रयास के पश्चात ही यूपीए सरकार ने पूरे भारत के किसानों के कर्जे माफ करने और किसान हित में अधिकाधिक सब्सिडी, कम-से-कम ब्याज और आसान ;ण-शर्तों के पायलट प्रोजेक्टों को अपने एजेण्डे में स्थान दिया। निश्चित रूप से यह अपने आप में शोध ा का और चर्चा-परिचर्चा का विषय हो सकता है। मैं विशेष आभारी हूं माननीय रणदीप सिंह सुरजेवाला का जिन्होंने मुझे इतने विशिष्ट कार्य के संपादन की जिम्मेवारी प्रदान की । आशा करता हूं कि मैं उनके विश्वास की कसौटी पर खरा सहा हो उंगा। मैं आभारी हूं समस्त सुरजेवाला परिवार और उनके उन सभी अंतरंग मित्रों तथा पार्टी कार्यकर्ताओं का जिन्होंने मेरे अनुरोध पर सभी आवश्यक सूचनाएं एवं सामग्री उपलब्ध करवाई।

अंत में मैं चौ. शमशेर सिंह सुरजेवाला साहब को विशेष आभार प्रदान करता हूँ कि जिन्होंने इस कार्य में न केवल अपेक्षित सहयोग प्रदान किया अपितु मेरे मान-सम्मान और गरिमा का ख्याल मेरे खुद से भी ज्यादा अपने घर के सदस्य के रूप में ही रखा। पुस्तक में प्रचार-प्रसार या व्यावसायिक दृष्टिकोण

से किसी भी तथ्य को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत नही किया गया है। यह एक ऐसे मुसाफिर के रास्ते की दास्तान है जिसने जिसे खुद अपने परिश्रम और अपनी योजनाओं से स्वयं अपने लिए तैयार किया और आगे-ही-आगे बढ़ता गया। पुस्तक में वर्णित सभी तथ्य, साक्ष्य, विवरण एवं घटनाक्रम लेखक के नितांत मौलिक विचार है, जिन्हें पुस्तक में ज्यों का त्यों स्थान दिया गया है ताकि उनकी खूबसूरती और मौलिकता यथावत बरकरार रहे। मैंने अपने कार्य संयोजन में उन्हें सिर्फ एक पुस्तकीय क्रम एवं व्यवस्थित आकार प्रदान करने का कार्य किया जो कि इस व्यवस्था के अन्तर्गत मेरी एक अनुभवजनित ड्यूटी थी। आशा है कि मै अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह (संग्रहण एवं संयोजन) यथावत् कर पाने में सफल रहा हो ऊंगा। इसी कोशिश के अन्तर्गत अपेक्षा है सुधी पाठकों के उत्साहवर्धक प्रतिसाद की।

-डॉ. जगदीप शर्मा राही

बचपन

मित्रो!

ज़िंदगी के सफर पर जब सरसरी-सी नजर डालता हूँ तो ताज्जुब होता है कि जिंदगी का इतना लंबा-चौड़ा, विशाल मैदान मानो कुछ पलों में ही पार हो गया। सारी-की-सारी स्मृतियां जेहन में ज्यों की त्यों ताजा हैं, मानो कल की बात हो। परन्तु जब थोड़ा गहराई से चिन्तन करता हूँ तो पाता हूँ कि मानो संघर्ष, कष्ट, जद्दोजहद और स्पर्धाओं का एक युग पीछे छूट गया है जहां अपने वजूद, अपने अस्तित्व को बचाने के लिए आदमी को पल-पल सजग और सचेत रहना पड़ता है और वो भी तब बच पाता है, जब ऊपर वाला, परमपिता-परमात्मा उसे बचाए रखना चाहता हो। खैर! प्रभु की कृपा रही और बचते- बचाते हुए इस मुकाम तक आ पहुंचे तो अब लगने लगा है कि जीवन की शाम और सफर का मुकाम नजदीक है। ऐसे में स्मृतियां बार-बार कौंधती है और बैठे-बिठाए न जाने कैसे-कैसे पल कौन-कौन से रास्ते और पड़ाव अचानक चकाचौंध हो उठते हैं लगता है मानो पूरे जीवन का सफर प्रकाशवान हो उठा है। एक-एक घटना, एक-एक स्मृति बड़ी साफ-साफ दिखने लगती है। ऐसे में मुझे मेरे जीवन की पहली घटना जो मेरे बचपन की स्मरण है वो आज भी बरबस ही मेरे होठों पर मुस्कान ला देती है। मैं शायद तीन-एक वर्ष का ही रहा हूंगा कि मैं, मेरे पिता जी चौ. गंगा सिंह, मेरी माता जी श्रीमती फूलमा देवी मेरे मामा के यहां कान्हाखेड़ा गांव में किसी शादी समारोह में शामिल होने के लिए जा रहे थे। मेरे पिता जी के पास एक मोटर साईकिल थी जिसे हम बम्बी वाली मोटर साईकिल के नाम से जानते थे। मैं अपने सिर पर एक हैट पहने हुए था। जैसे ही हम चले रास्ते में

एक जगह मेरी हैट हवा के जोर की वजह से उड़कर दूर जाकर गिरी। जब तक मोटरसाईकिल रुकी तब तक दूरी और भी बढ़ गई थी। पिता जी ने मोटरसाईकिल रोकी और मुझे हैट लाकर देते हुए डांटकर कहा, 'अगर दोबारा उड़ाएगा तो फिर नहीं उठाएंगे।" अब बचपन यदि सीमाओं में बंधे और डांट-डपट ना भूले तो फिर उसे बचपन कौन कहे। थोड़ी देर तो मैं उसे दोनों हाथों से पकड़े रहा, लेकिन आखिर में वह मेरे हाथ से छूट कर फिर से उड़ गया। लेकिन पिता जी अपनी जुबान के पक्के थे, उन्होंने न मोटरसाईकिल रोकी और न ही मेरा हैट आया।

बचपन की यह पहली स्मृति जो मुझे आज ज्यों की त्यों याद है और ताज्जुब की बात तो यह है कि मेरी उम्र शायद तीन-एक वर्ष की ही रही होगी।

बचपन के मासूम दिलो-दिमाग पर दो प्रकार की स्मृतियां ही अपनी छाप छोड़ती हैं शादी की या गमी की। यानी या तो कोई खुशी की बात या फिर दुःख का दर्द कच्चे मासूम हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं।

ऐसी ही एक दूसरी घटना आज भी मेरे दिलो-दिमाग पर अंकित है जिसने ना केवल मेरे जीवन को प्रभावित किया अपितु मेरी ज़िंदगी को ही बदल कर रख दिया।

मेरी उम्र शायद पांच या छः वर्ष की रही होगी, जब हम हमारे पुश्तैनी मकान के एक कमरे में मेरे ताऊ श्योराम के साथ सोए हुए थे। तब तक मेरे दूसरे भाई बलवंत सिंह और तारीफ सिंह का भी जन्म हो चुका था। मैं एक चारपाई पर तथा बलवंत व तारीफ दोनों एक चारपाई पर सोए हुए थे। दोनों की उम्र तीन-चार वर्ष से कम रही होगी, क्योंकि मैं ही बामुश्किल पांच-छः बरस का

रहा होगा। मुझे तब तक मौत की घटना या मृत्यु शब्द तक की भी जानकारी नहीं थी। अचानक रात को कमरे का दरवाजा खुला और कमरे में दुर्गा नाम के हमारे एक रिश्तेदार ने प्रवेश किया। दुर्गा हमारी दूर की रिश्तेदारी से था जो कई वर्षों तक हमारे परिवार के साथ ही रहा और हमारे परिवार की हर शादी-विवाह में उसे कोठे की चाबी दी जाती थी। खैर! उसने मेरे ताऊ श्योराम को जगाकर कहा-बहू के सांस पूरे हो लिए। मुझे ये शब्द तो आज भी याद हैं पर मैं इनका अर्थ और दर्द उस वक्त बिल्कुल भी नहीं जानता था सो मैं फिर से सो गया। दोनों भाई पहले ही नींद में सोए थे। सुबह पूरा परिवार मातमी शोक में डूबा था, औरतें रुदन कर रही थी और हम बच्चों को भी अंत्येष्टि क्रिया के लिए ले जाया गया। दाह-संस्कार के पश्चात् जब सब लौटकर आए तो हमारी जो हवेली आज भी स्थापित है, उसके मुख्य द्वार पर एक चारपाई पड़ी थी, मैं उसी पर बैठ गया और मन में यही सोच रहा था कि जब मेरी मां आएगी, मैं उसके साथ ही घर जाऊंगा। क्योंकि आने-जाने का केवल वही एक रास्ता था और मेरी मां उसी रास्ते से आती जाती थी। मुझे लगता था कि मेरी मां कहीं नहीं गई वो अभी आ जाएगी और मुझे घर ले जाएगी। उस घटना को याद कर मेरी आंखें आज भी भीग जाती हैं। मैं विधाता को याद कर कहता हूँ कि हे परमात्मा! तूने मुझे सब कुछ दिया पर बचपन में दी वो चोट इतनी सख्त लगी कि आज भी दिल पर घाव ताजा है। मेरी मां की मौत ने मेरे पूरे जीवन को प्रभावित किया। उन दिनों में तो न जाने कैसे मेरे अवचेतन मन में एक निराशा सी छाई रहती। मैं ज्यादातर अकेला ही रहता। मुझे आज तक भी याद है कि मैं जब भी गांव के खेतों में अकेला होता तो बहुत जोर-जोर से रोया करता। ना कोई कुछ कहता था, ना

कोई बात होती पर मैं एकांत मिलते ही जोर-जोर से रोना शुरु कर देता। ये जोर-जोर के रोने वाली स्मृतियां भी मेरे दिमाग में आज भी ज्यों की त्यों अंकित है।

हमारे परिवार में आदमियों की बड़ी कमी थी। इसी वजह से हमारी देखरेख और निगरानी ज्यादा चौकस रहती थी। शायद यही वजह रही कि हम गांव के बच्चों के साथ या इधर-उधर ज्यादा समय नहीं बिताते थे। हां! हमारी हवेली के सामने वाले तालाब में मैं खूब नहाता था और तैरना भी मैंने वहीं सीखा।

बचपन की एक और घटना मुझे अचानक स्मरण हो आती है। गर्मी के उन दिनों में सब लोग अपनी-अपनी चारपाईयों को लेकर गलियों में, चौक में या किसी सांझे बैठक या नोहरे में आ जाते थे। पंखे-बिजली तो तब तक गांवों में पहुंचे ही नहीं थे। ना किसी को कल्पना ही थी। खैर! हमारी हवेली के चौक में बड़े-बूढ़े सब अपनी चारपाईयों पर जमे थे। मेरे ताऊ राजाराम ने अपने लड़के को कहा - अरै सिसाले! भाई तू तड़के नै एक बार भाणा जाकै आइए। सिसाल सिंह मेरा भाई लगता था और उम्र में मुझसे थोड़ा बड़ा था। उसे घोड़ी चलाने का बड़ा शौक रहता। अगले दिन सुबह नौ-एक बजे का टाईम था कि मेरे ताऊ राजाराम को जैसे ही सिसाल सिंह दिखलाई पड़ा तो उन्होंने पूछा - अरै एक बार भाणा जाण की कहूं था अर। सिसाल सिंह बोला - भाणा तो मैं जा आया बाबू। मैं तो तड़के घोड़ी पै चढ़कै भाणै गया अर उलटा आ लिया। ताऊ राजाराम बड़े अचम्भित हुए और बोले अरै कम से कम काम तो पूछ लेता के है? सिसाल सिंह ने सरलता से कहा - काम की तो बाबू तनै कहया कोनी था। मैं तो भाणा जाकै अर उल्टा ए घोड़ी मोड़ ल्याया। इस बात का जिक्र जब अगले दिन शाम की चौपाल

में हुआ तो सब ठहाके लगाकर हंसे। बहुत सरलता थी तब जीवन में बड़े भोले जमाने होते थे।

शिक्षा

मित्रो! उस जमाने में पढ़ने-लिखने को कोई ज्यादा बढ़िया और महत्वपूर्ण काम नहीं माना जाता था। खासतौर से उन घरों में तो बिल्कुल नहीं जिसके पास पुश्तैनी जमीनें और लम्बी चौड़ी जायदाद होती थी। यह बात शहरी घरानों के सन्दर्भ में नहीं अपितु उन ठेठ ग्रामीण इलाकों के सन्दर्भ में है जहां तब तक प्राईमरी स्कूल भी नहीं खुले थे। मिडल और मैट्रिक स्कूल तो उस जमाने में ब्लॉक स्तर अथवा जिला केन्द्र पर ही होते थे। मैंने अपनी प्राईमरी की प्रारम्भिक शिक्षा बेलरखा गांव के प्राईमरी स्कूल से प्राप्त की जहां मैं कक्षा चार तक पढ़ा। बेलरखा गांव में उस वक्त स्कूल की अपनी कोई बिल्डिंग नहीं थी। कक्षाएं चौपालों में लगती थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि हमारी कक्षाएं चौपड़ा पत्ती एवं रामू पत्ती की चौपालों में लगी। उस समय स्कूल का हैडमास्टर मास्टर रामसिंह होता था। जो जाति से महाजन और रोहतक का रहने वाला था। उन जमानों में मास्टर प्रायः दूर-दराज के रहने वाले ही होते थे और उसी गांव में रहते, जहां उनकी नौकरी होती। मास्टर रामसिंह मंझोले कद का खूब गोरे रंग वाला काफी हृष्ट-पुष्ट आदमी था। मेहनती भी था, अनुशासित भी और बच्चों की पढ़ाई में रूचि भी लेता था। मैं बाकी विषयों में तो ठीक था, परन्तु मेरा गणित कुछ कमजोर था। एक बार जब कोई सवाल नहीं निकाल पाया तो मास्टर जी ने मुझे खूब जोर से चांटा मारा। बस फिर पता नहीं कैसे मति मारी गई कि मुझे गणित से नफरत हो गई। मेरी गणित में बिल्कुल ही रूचि खत्म हो गई। यही वजह रही थी कि आगे चलकर

गणित की कमजोरी के कारण अगली कक्षाओं में मेरी अंक प्रतिशतता कम रही। इसके बाद मैंने पांचवी कक्षा में नरवाना शहर के सरकारी स्कूल में दाखिला लिया। 1941 की बात है उस वक्त सरकारी स्कूल की पुरानी बिल्डिंग चौपड़ा पत्ती के पास लाला जियालाल की हवेली के सामने वाले स्कूल की होती थी। जिसका नाम यादविन्द्र हाई स्कूल था। वहां मै जब पांचवी कक्षा में था तो स्टुडैंट कांग्रेस से जुड़ गया। शायद 1946-47 की बात है कि रेलवे रोड़ वाली पब्लिक धर्मशाला में एक खुफिया मिटिंग हुई जिसमें पंजाब के लीडर आए थे। एक था आर. के. बहल जो धुरी से था तथा पटियाला कॉलेज का स्टुडैंट लीडर था। दूसरा संगरूर से आया था जिसका मुझे नाम ध्यान नही। संगरूर वाला लीडर प्रधान था तथा पटियाला वाला जनरल सेक्रेटरी था। यहां के लोगों में तब कांग्रेस नही थी। प्रजामण्डल पार्टी काम करती थी कांग्रेस की सहायक पार्टी के रूप में। क्योंकि यह क्षेत्रा पटियाला राज की रियासत के अन्तर्गत आता था और उस वक्त प्रजामण्डल पार्टी के लीडर बाबू बृजभान तथा ज्ञानी जैल सिंह सिंह आदि नेता थे।

उस मीटिंग में हम पांच छः लड़के भी शामिल हुए थे। जिनमें गुरथली के जोगेन्द्र सिंह तथा नरवाना शहर के त्रिलोकी और गिरधारी का नाम अभी तक याद है। त्रिलोकी-गिरधारी सगे भाई थे और इनके पिता जी की एक कॉटन मिल होती थी, जिसका नाम था, न्यू कॉटन जिनिंग मिल।

खैर! मैंने स्टुडैंट कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की तथा सक्रिय पार्टी वर्कर के तौर पर काम शुरु कर दिया। मेरी इन गतिविधियों के चलते मुझे आठवी कक्षा के इम्तहान शुरु होने से पहले ही स्कूल से निकाल दिया। क्योंकि हमारी मूवमैंट पटियाला

रियासत के खिलाफ थी तथा अंग्रेज के भी खिलाफ थी। इस प्रकार मेरा एक साल खराब हो गया। तभी जीन्द का जाट स्कूल नया-नया खुला था। वहां बच्चों के दाखिलों की जरुरत थी। मै वहां गया और जाट स्कूल में दाखिला ले लिया। वहां से आठवी कक्षा पास करते ही नौवी कक्षा में मैंने स्टेट हाई स्कूल जीन्द में दाखिला लिया जो सरकारी स्कूल था। नरवाना वाले सरकारी स्कूल का नाम यादविन्द्रा स्टेट हाई स्कूल होता था, जो महाराजा यादविन्द्र के नाम पर रखा गया था।

मेरे पिता जी मेरा नाम कटने पर बहुत नाराज हुए। वे मेरी छात्रा राजनीति की गतिविधियों से भी नाराज थे। वे नही चाहते थे कि मै स्टुडैंट कांग्रेस में काम करूं। क्योंकि वो जमींदार लीग के अध्यक्ष थे, जो छोटूराम की पार्टी थी। उन्होंने मुझे दो थप्पड़ भी मारे और कहा कि - "हमारी जमीनें छिनवाएगा क्या?" मेरे पिता जी के नाम 1400 बीघे जमीन थी।

परन्तु मेरी विचारधारा शुरु से ही मार्क्सवादी थी। मै गरीब-बेसहारा लोगों के दुःख-दर्द के बारे में ज्यादा सोचता था।

खैर जैसे-तैसे 1950-51 में मैंने दसवी पास कर ली तथा आगे की पढ़ाई के बारे में सोचने लगा। उन दिनों में मेरे एक ताऊ होते थे श्योराम। उसके तीन पुत्रा थे ठाकरा सिंह, दिलीप सिंह, प्रेम सिंह। ठाकरा सिंह उस वक्त हमारे परिवार के सबसे ज्यादा पढ़ेलिखे सदस्य थे जो कॉलेज तक गए थे तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान आर्मी में भर्ती हो गये थे। वो मुझसे बड़ा स्नेह रखते थे।

उनसे छोटे थे दिलीप सिंह, उनकी मेरे पिता जी के साथ खूब बनती थी वो मुझसे भी खूब स्नेह रखते थे। दिलीप सिंह का भिवानी में एक पोल्ट्री फार्म था और वो वही रहते थे। वे मुझ से

बार-बार कहते कि तू पढ़ने के लिए भिवानी आ जा। कॉलेज में दाखिला ले-लेना और मेरे साथ रहना। खैर! मै चला भी गया और दाखिला लेने के लिए जब किरोड़ीमल कॉलेज पहुंचा तो वहां का माहौल देखकर मै हैरान रह गया। वहां पर स्टुडैंट सिरों पर मोटे चोटे रखे हुए थे तथा पतलून की जगह फट्टे वाले पायजामे पहनते थे। मुझे माहौल पसंद नही आया तो मैंने घर आकर अपने भाई को कहा कि मै यहां नही पढ़ूंगा। भाई ने पूछा फिर कहां पढ़ेगा? मैंने कहा मैं तो रोहतक पढ़ूंगा। उस वक्त पूरे हरियाणा प्रान्त का एकमात्रा सरकारी कॉलेज रोहतक में ही था। इसी वजह से वहां दाखिला लेने की होड़ भी रहती थी। भाई ने पूछा रोहतक में कोई जान-पहचान है किसी से? मैंने कहा जान पहचान नही है, फिर भी मै जाऊंगा। खैर! मैंने सामान लिया जो एक सूटकेस और होलडॉल (बिस्तरबन्द) के रूप में थे और रोहतक पहुंच गया। कॉलेज के पास ही उस वक्त एक रेस्त्रां होता था जिसका नाम शान्तमयी रेस्त्रां था। उसका मालिक एक पंजाबी था जो शरीफ किस्म का इन्सान था और बाद में हमारा हमजोली भी बन गया था। मैंने उसे बताया कि मै नरवाना से आया हूं और दाखिले के सिलसिले में कॉलेज तक जाकर आता हूं उसने मेरा सामान एक कोने में रखवा दिया।

मेरी किसी से कोई जान-पहचान तो थी नही, सो मैंने ऐसे ही एक लड़के से पूछ लिया कि यहां स्टुडैंट लीडर कौन है जिसकी कॉलेज में पूरी धाक हो। उसने बताया कि जतिन्द्र सिंह यहां कॉलेज का स्टुडैंट लीडर है। जतिन्द्र सिंह वाकई एक योग्य स्टुडैंट लीडर था। वह एथलीट भी था और हॉकी का कप्तान भी था। लड़कों की वह बड़ी ईमानदारी से मदद करता था। खैर! मै उसे ढूंढते-ढूंढते कॉलेज कैन्टीन तक पहुंच गया जो उस वक्त हॉस्टल

और कॉलेज बिल्डिंग के बीच में होती थी। सर्दियों के दिन थे। वह धूप में अपनी मित्रामण्डली के साथ बैठा चाय पी रहा था। मैंने पूछा-भाई आप में जतिन्द्र सिंह कौन है? वह बोला मैं हूं भाई। कहिए क्या बात है? मैंने कहा भाई साहब जरा इधर आना और मेरी बात सुनो प्लीज। वह उठकर आया तो मैंने कहा भाई साहब! मैं नरवाना से आया हूं और यहां दाखिला लेना चाहता हूं। जतिन्द्र सिंह को जब पता चला कि मेरी थर्ड डिविजन है तो वह बोला मुश्किल है। उसने फिर कहा तुम इस साल वैश्य कॉलेज या जाट कॉलेज में दाखिला ले लो। अगले साल मैं तुम्हारा माईग्रेशन करवा दूंगा। मैंने कहा भाई साहब! मैं तो सिर्फ इसी कॉलेज में पढ़ना चाहता हूं। कुछ देर सोचने के बाद वह बोला चलो। वह मुझे शहर में ले गया और एक कोठी में पहुंचने पर पता चला कि वहां के स्थानीय एम.एल.ए. श्रीचंद की कोठी थी और वह छोटू राम का भतीजा था। श्रीचंद का लड़का जतिन्द्र सिंह के साथ पढ़ता था। इसलिए वह उसे अच्छी तरह जानता और पहचानता था। श्रीचंद की कोठी को उस समय नीली कोठी के नाम से जाना जाता था। श्रीचंद को जतिन्द्र ने मेरे बारे में बताते हुए कहा कि यह भाई साहब नरवाना से आया है और सरकारी कॉलेज में ही दाखिला लेना चाहता है। श्रीचंद ने मुझसे पूछा नरवाना के किस गांव से हो बेटा? मैंने कहा जी सुरजेवाला खेड़ा से। उन्होंने फिर पूछा गंगासिंह को जानते हो? मैंने कहा जी, मैं उन्हीं का लड़का हूं। श्रीचंद जी एकदम खड़े हो गए और मेरी कोली भर ली। वे बोले- रै बेटा तू तो म्हारा ऐ छोरा सै। गंगा सिंह म्हारी पार्टी का लीडर, म्हारा आपणा आदमी है। उसक वक्त पिता जी जमीदार लीग पार्टी के नरवाना क्षेत्रा के अध्यक्ष होते थे, जो छोटूराम की पार्टी थी। फिर

उन्होंने हमारे लिए चाय-नाश्ता मंगवाया। श्रीचंद जी ने उसी वक्त कॉलेज प्रिंसीपल को फोन किया। कॉलेज प्रिंसीपल को भी जब मेरे नम्बर मालूम हुए तो उसने भी दाखिला देने में असमर्थता जाहिर की। लेकिन श्रीचंद जी ने पूरा ठोककर कहा कि देखिए श्रीमान् यह हमारे साथी का लड़का है। और उसे दाखिला तो आपको देना ही पड़ेगा। कॉलेज प्रिंसीपल का नाम आर.आर. कोमरिया था, जो बड़े समझदार आदमी थे। परिस्थिति को समझते हुए बोले - अगर ऐसी बात है तो अभी कॉलेज भेज दो। उन्होंने मुझे जाते ही दाखिल कर लिया, लेकिन हॉस्टल में दाखिल नही किया। पहले दाखिला को लेकर समस्या थी अब रहने की व्यवस्था को लेकर उलझन ।

फिर अचानक मेरी मुलाकात एक दरियाव सिंह नाम के लड़के से हुई। उसका गांव था मल्हाणा जो सोनीपत में पड़ता है। उसे भी हॉस्टल में सीट नही मिली थी। हमने दोनों ने इकट्ठे रहने का फैसला किया। हमने रोहतक के बड़ा बाजार में एक कमरा किराए पर लिया तथा खाने की व्यवस्था उसी शान्तमयी रेस्त्रां में की जिसका मालिक पंजाबी था और उसका नाम था बीरभान। उससे अगले साल हमें हॉस्टल मेंदाखिला मिल गया और हम खूब मन लगाकर पढ़ने लगे। मुझे मेरे पहले आए हुए नम्बरों को लेकर बड़ा दुःख रहता। मैं मन ही मन एक ही बात सोचता कि अब खूब मन लगाकर पढ़ूंगा और अच्छे नंबरों से पास होऊंगा। स्कूली परीक्षा में मेरी थर्ड डिविजन का कारण मेरी संगति थी। हम सब बच्चे गांवों के ही थे, पढ़ाई के लिए कोई टोका-टाकी तो थी ही नही मेरे साथ के सारे के सारे बच्चे फेल हो गए थे। मैं अकेला था हमारे ग्रुप में जो पास हुआ था। उस कसर की कसक मेरे सीने में रह-रहकर चुभती। इसी वजह से मैंने खूब मेहनत की और मेरी

गुड सेकण्ड डिवीजन आई। उन दिनों गुड सैकण्ड डिवीजन का रुतबा फर्स्ट डिवीजन के समान होता था। फर्स्ट डिवीजन वाले को तो आश्चर्य से देखा जाता था मानो किसी दूसरे ग्रह का प्राणी हो।

इस प्रकार 1951-54 का दौर मेरे जीवन का रोहतक कॉलेज में बड़ा आनन्दमयी रहा जहां से मैंने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। अब मेरे मन में जो टीस थी उसे पूरा करने का अवसर आ गया था। मेरे ताऊ के लड़के की बात मुझे अभी तक याद थी और मेरे वकील बनने का संकल्प भी। सो मैंने वकालत के लिए जालंधर के यूनिवर्सिटी कॉलेज में आवेदन किया। यह कॉलेज उन्हीं दिनों लाहौर से आया था।

मेरे वकील बनने का वाकया भी बड़ा दिलचस्प है। सही मायने में तो यह कहिए कि केवल इसी काम की प्रेरणा मुझे मेरे घर-परिवार से प्राप्त हुई थी। बाकी के सारे काम या तो अपनी मर्जी से किए या फिर भगवान की मर्जी से हुए।

नरवाना स्कूली टाईम में मैं शनिवार को ही घर जाता था। शनिवार को मुझे घरवाले लेने आते थे। मेरे पिता जी मुझे कार से लेकर जाते या फिर शहर आया हुआ परिवार का कोई सदस्य मुझे साईकिल पर बिठाकर ले जाता। एक बार मेरे ताऊ का लड़का मुझे साईकिल पर बिठाकर ले जा रहा था तो रास्ते में मोहलरखेड़ा गांव के पास उन्होंने मुझसे पूछा भाई तू पढ़-लिखकर क्या बनेगा? मैं शायद पांचवी - छठी कक्षा में रहा हूंगा इसलिए कुछ नहीं बोला। फिर उन्होंने ही कहा-देख! तू पढ़-लिखकर वकील बन जाना। वकील की बड़ी पूछ होती है। यहां पर नरवाना में दो वकील है। बाबूराम और कुलवंत राय। इन दोनों के बिना ना कोई विवाह होता है, ना सगाई होती है तथा ना कोई पंचायत होती है। मैंने अपने

भाई की बात को उसी दिन पल्ले बांध लिया तथा मन-ही-मन संकल्प लिया कि मैं एक दिन वकील जरूर बनूंगा। इसलिए मैंने जालंधर के लॉ कॉलेज में एडमिशन लिया तथा 1955-57 तक लॉ की परीक्षा पास की। लॉ में मेरी यूनिवर्सिटी में सैकिण्ड पोजीशन रही। इस प्रकार मेरी शिक्षा का सफर पूरा हुआ।

परिवार

परिवार की शुरुआत वैसे तो वंशावली से होती है। परन्तु स्मृति थोड़ी कमजोर हो गई है, इसलिए सब बुजुर्गों के बारे में विस्तार से उतना नही बता पाऊंगा। वैसे मै इतना जानता हूँ कि हमारे गांव का नाम हमारे ही पूर्वज सूरजा के नाम पर है और गांव को भी उसी ने बसाया था। मेरी माता जी का नाम फूलमा देवी और पिता का नाम चौ. गंगा सिंह है जो आप पिछले पृष्ठों में पढ़ चुके है। मेरी माता जी का स्वर्गवास तो मेरे बचपन में ही हो चुका था जिसके पश्चात् हमारा पालन पोषण हमारी दूसरी माता जी और दादी जी ने किया। मेरी माता जी फूलमा देवी का गांव कान्हारखेड़ा था और गोत्र नैन था। इसलिए मुझे बिन्याण का भान्जा भी कहा जाता है। मैंने नाना को नही देखा। मेरे चार मामे थे। 1. गुरदित्ता 2. रामदित्ता 3. साहिबदित्ता (अल्पायु) 4. कन्हैया सबसे छोटी मेरी मां फूलमां देवी थी। मै अपने ननिहाल में खूब खेला-कूदा हूं और बाद में भरपूर सिंह आदि जो मेरे हमउम्र थे, भाई लगते थे उनसे खूब दोस्ताना व्यवहार रहा है।

मेरी दूसरी माता जी का नाम गंगा देवी था। गंगा देवी आंटा गांव के चौ. शेरसिंह की पुत्री थी। चौ. शेर सिंह तब तहसीलदार होते थे और अपने क्षेत्र के विख्यात आदमी थे। बहुत से लोगों को आज तक भी ये नही पता कि हम छः भाई और छः बहनें अलग-अलग माताओं की संतान है। हमारा पालन-पोषण

हमारी दूसरी माता जी गंगा देवी और हमारी दादी जी ने किया। दादी जी को सभी माणी वाली के नाम से जानते थे। क्योंकि वह माणी गांव की थी जो टोहाना के पास है शायद। वह बड़ी नेक दिल और दयालु स्वभाव की थी। हमारी माता जी ने हमारे लालन-पालन में कभी कोई फर्क नहीं समझा। मेरे पिता जी भी इस मामले में बड़े सजग और सतर्क रहते थे। मेरे पिता जी चौ. गंगा सिंह बड़े मेहनती, लग्नशील, कर्मठ, उन्नत सोच के धनी थे। वे रोज प्रातः चार बजे उठ जाते और सुबह-सुबह सभी खेतों का चक्कर लगाकर आते, खेतों में जाने की परम्परा हमारे परिवार में अब भी कायम है। मेरे सभी भाई और उनकी पत्नियां रोज नियम से अपने खेतों को संभालने जाते हैं तथा वहीं से अपने पशुओं का ताजा दूध निकलवाकर शाम को ले आते हैं। मेरे पिता जी खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने के खूब शौकीन थे। उस जमाने में उन्होंने बहुत ही शानदार मकान बनवाया, जिसकी चर्चा आस-पास के गांवों में होती। वे मोटरसाईकिल रखते थे और 1933-34 में ही पहली बार कार लेकर आए जिसका नाम था क्राईसलर। इसके बाद 1941-42 में 8 सिलेण्डर फोर्ड कार लेकर आए। 1951-52 में हिन्दुस्तान में बनी कार को उन्होंने तरजीह दी। गाड़ी की सफाई और सर्विस के लिए उन्होंने घर में एक सर्विस-डक बनवाया था। जहां मकैनिक घर पर जाकर ही सर्विस करते थे। उनको देश-दुनिया की जानकारी की बड़ी रूचि रहती थी। इसलिए 1951-52 में वो टेलिविजन लेकर आए थे। रेडियो तो उन्होंने द्वितीय विश्व यु) से ही रखना शुरु

कर दिया था। मेरे पिता जी 78 वर्ष तक जीवित रहे और 1992 में उनका स्वर्गवास हो गया। वे हमेशा सादगी से रहते थे और सीधी बात करते थे। उनकी इसी सरलता और सादगी का ही प्रभाव शायद मेरे जीवन में कहीं-न-कहीं आज तक समाहित है। उनकी दो बातें मुझे आज तक याद है जो वे हमेशा कहते- सच बोलना चाहिए और कमाकै खाणा चाहिए।

मित्रो! मां-बाप के पश्चात् भाई-बहनों का स्थान होता है। मेरी मां फूलमा देवी की तीन संतानें थी जो हम तीन भाईयों के रूप में हैं- मैं स्वयं, मेरे भाई बलवंत सिंह और मेरे भाई तारीफ सिंह। मेरी मां गंगा देवी के भी तीन पुत्र और छः पुत्रियां है। तीन पुत्रों में जगदीप सिंह, हरबीर सिंह एवं बरजिन्द्र सिंह है तथा पुत्रियों में सुशीला, उर्मिल, ललिता, प्रोमिल, प्रणीता, एवं वनिता है। परिवार के सदस्य मेरी बहनों को दस जमात से आगे पढ़ने के पक्ष में नहीं थे। क्योंकि उन दिनों कॉलेज भी बहुत दूर-दूर होते थे। मैं उस वक्त एल.एल.बी. का छात्र था जब मेरी बहन शीला ने दसवीं पास की। मैं घरवालों को समझा-बुझाकर उसे आगे पढ़ाने के लिए पटियाला लेकर गया । पटियाला में लड़कियों का एक ही कॉलेज था यादविन्द्रा कॉलेज। मैंने मेरी बहन को दाखिल करवाया और अपने कॉलेज में जालंधर चला गया। लेकिन जब मैं छुट्टियों में वापिस आया तो मैं हैरान रहा गया कि मेरी बहन तो मेरे से पहले ही आई हुई है। पूछने पर पता चला कि वह पढ़ाई छोड़कर आ गई है। दाखिला लेने के कुछ रोज बाद ही उसने घर पर फोन कर दिया

कि मुझे लेकर जाओ यहां मेरा मन नही लगता। घरवालों ने मेरे भाई जगदीप सिंह को भेजकर उसे वापिस बुलवा लिया। मैंने मेरी बहन को खूब डांटा तथा घरवालों को लताड़ा। फिर जैसे-तैसे सबको समझा-बुझाकर उसे वापिस कॉलेज भिजवाया। तब उसने वहां से ग्रेजुएशन पूरी की । मेरी सभी बहनें और भाई खूब पढ़ेलिखे तथा सबने अपनी-अपनी जिन्दगी के निर्णय स्वयं लिए। मेरे भाईयों का और मेरा मुख्य व्यवसाय आज भी कृषि है तथा हम सबको खेतों में जाना बहुत अच्छा लगता है।

मेरे भाईयों में तारीफ सिंह, हक्बीर सिंह और जगदीप सिंह का स्वर्गवास हो चुका है। जब ये बात मन पर आ जाती है तो बड़ी निराशा होती है परन्तु मालिक की मर्जी मान फिर अपने आपको सम्भालना पड़ता है।

मित्रो! इस प्रकार हमारा एक भरा-पूरा परिवार है अब जिसमें इंतजार था दिनोंदिन खुशियों की बरसात होने का। जिस घर में छः लड़के और छः लड़कियां हों तथा साल-दस-साल शादी करनी पड़ जाए तो खुशियों की बौछार की तो बस कल्पना ही की जा सकती है। मेरे पिता जी ने और हम भाईयों ने अपनी सभी बहनों के रिश्ते बड़ी धूम-धाम से अच्छे घरानों में किए तथा हम सब भाईयों के रिश्ते भी वैसे ही घरानों से लिए। मेरे रिश्ते की दास्तान भी बड़ी रोचक है। कान्हाखेड़ा वाले मेरे मामा जी गुरदित्ता की शादी गोरखपुर हुई थी। उनके ससुर को केवल लड़कियां ही लड़कियां थी। जमीन-जायदाद ज्यादा थी। पता नही किस वजह से

उनका गोरखपुर वाली जमीनों का एक केस हिसार की अदालत में चलता था। हिसार के वकील चौ. मानसिंह उनका केस लड़ रहे थे। केस के सिलसिले में मेरे मामा का हिसार आना-जाना होता रहता था। मेरे पिता जी भी प्रायः साथ ही चले जाया करते। वे जब भी हिसार जाते तो वही वकील साहब के यहां ठहरते। वकील साहिब की एक बिटिया थी, विद्या, जो उन दिनों विवाह के योग्य हो गई थी। वकील साहब को हमारी जमींदारी और पिता जी की प्रतिष्ठा की पहले से जानकारी थी। चौ. मानसिंह ने पिता जी के सामने रिश्ते का प्रस्ताव रखा, जिसे मेरे पिता जी चौ. गंगा सिंह ने स्वीकार कर लिया। इस प्रकार व्यावसायिक जानकारी रिश्तेदारी में तबदील हो गई।

मित्रो ! 1949 में मेरी शादी हुई। तब मैं नौवीं कक्षा का छात्र था और सोलह वर्ष पूरे कर सत्राहवें में प्रवेश कर रहा था। चौ. मानसिंह की पुत्री विद्या देवी मेरी धर्मपत्नी बनी। मेरी पत्नी ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं है। सिर्फ अक्षरज्ञान की जानकारी है। किन्तु व्यवहार और बौद्धिक दृष्टि से वे पूरी कढ़ी हुई हैं। मैं वकील भी हूं और नेता भी। परन्तु यदि मैं कोई बात उनसे छिपाने की चेष्टा भी करता तो वे फौरन ताड़ जाती। स्वभाव से नरम और दयालु स्वभाव की है मेरी धर्मपत्नी। मेरे फैसले में उसने मेरा साथ दिया। मैंने अपने भविष्य और कैरियर को ध्यान में रखकर लगातार दस वर्ष तक फैमिली प्लानिंग की। मेरी पत्नी ने इसमें सहर्ष सहयोग किया।

1957 में जब मेरी वकालत पूरी हुई और मैंने वकालत की प्रैक्टिस शुरु कर दी तो तब जाकर 1959 में हमने अपनी पहली संतान को प्राप्त किया। 1959 में मेरी पहली संतान बेटी मधु के रूप में हुई। फिर 1962 में मेरी दूसरी बेटी पूनम का जन्म हुआ। तीसरी सन्तान भी मेरी बेटी ही थी जिसका जन्म 1965 में हुआ और नामकरण किया गया नीरू। परन्तु नीरू का अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया। मुझे आज तक याद है कि पी.जी.आई. रोहतक में जब नीरू ने अंतिम सांस ली तो उसी दिन उसका दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम आया था। शिक्षा की परीक्षा में सफल रहने के बावजूद नीरू जीवन की परीक्षा हार गई थी। शायद 1977-78 की बात है उस वक्त मैं हरियाणा सरकार में वजीर था।

मित्रो! मैं शुरु से ही स्त्री शिक्षा का पक्षधर रहा हूं। मैंने मेरी बहनों को भी पढ़वाया तथा मेरी दोनों बेटियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित किया । मैंने बेटा-बेटी में कभी कोई फर्क नहीं समझा और फिर रणदीप का जन्म तो वैसे भी आठ साल के अन्तराल बाद हुआ था।

खैर! मैंने अपनी दोनों बेटियों को सोफिया स्कूल अजमेर, राजस्थान में दाखिला करवाया। वहां से उन्होंने अपनी प्रारम्भिक से लेकर दसवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की फिर उन्होंने अपनी ग्रेजुएशन गर्वन्मैंट कॉलेज फॉर वीमन चण्डीगढ़ से पूरी की।

मित्रो! मैंने अपनी बड़ी बेटी मधु का विवाह श्री ओम दलाल जी सुपुत्र चौ. मेहर सिंह दलाल सांपला वाले के साथ किया।

मूलतः ये छारा गांव के निवासी है। उस समय इनकी एक फाउंड्री थी। दिल्ली-हरियाणा में भट्ठे थे और वे ट्रक ट्रांसपोर्टर भी थे। मधु को इकलौती संतान के रूप में एक पुत्र है जिसका नाम है गौरव दलाल और जो आजकल अमेरिका में अपना व्यवसाय किए हुए है। गौरव दलाल वाशिंगटन डी.सी. यूनिवर्सिटी से कानून स्नातक है।

मेरी दूसरी पुत्री पूनम की शादी प्रदीप चौधरी बेनीवाल के साथ हुई जो चौ. नेहरूचन्द बेनीवाल के सुपुत्र है। चौ. नेहरूचन्द नहला गांव के वासी है और पंजाब सरकार के डिप्टी डायरैक्टर एग्रीकल्चर के पद पर लुधियाना से रिटायर हुए। बाद में उन्होंने भट्टू विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की टिकेट पर चुनाव लड़ा तथा 1972-77 तक एम.एल.ए. रहे।

मेरे दामाद प्रदीप चौधरी 1977 बैच के आई.ए.एस. अधिकारी है। पूनम की दो संताने एक बेटी प्रियंका तथा एक बेटा विक्रम चौधरी है। विक्रम चौधरी अमेरिका की शैम्पेन यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग में पी.एच.डी. कर रहे है। दोहती प्रियंका ने अपनी पंसद से एक कायस्थ परिवार में इंटरकास्ट शादी की है। दोहत्रा दामाद का नाम अपार है तथा मेरे पड़दोहते का नाम अहन है जो हमारे परिवार का सबसे छोटा सदस्य है ।

मित्रो! फिर 3 जून 1967 को मेरी किस्मत का सितारा बुलंद हुआ तथा पुत्र रत्न के रूप में रणदीप का जन्म हुआ। रणदीप मेरी चौथी संतान है तथा अपनी दोनों बहनों से छोटा है। दोनों

बहनें रणदीप से बेहद प्यार करती है और रणदीप भी उनका उतना ही मान-सम्मान करता है। रणदीप का जन्म स्थान पी.जी.आई. चण्डीगढ़ है। उस वक्त मैं सरकार में मन्त्री था और सैक्टर सात के अपने कॉर्नर वाले हाऊस में रहता था। ये महज इत्तिफाक की बात है या फिर किस्मत का कन्वेंशन है कि जब-जब रणदीप के जीवन से सम्बन्धित कोई महत्वपूर्ण मोड़ या खास वर्ष होता तो उसी दौरान मैं मंत्री होता था। जब रणदीप का जन्म हुआ मैं तब मंत्री था। जब रणदीप ने 12 वी कक्षा पास की मैं तब मंत्री थी। जब बी-कॉम ऑनर्स पास किया, मैं तब भी मंत्री था। जब एल.एल.बी. पास की और उसकी शादी वर्ष 1991 में हुई मैं तब भी मंत्री था। रणदीप मेरे भाग्य का सितारा है और हरियाणा की राजनीति को भी उससे बहुत उम्मीदें है। ये रणदीप की कार्यशैली और उसका अंदाज है कि उसके विरोधी और आलोचक भी उसकी कार्यप्रणाली के फैन है। परमात्मा उसे मुझसे भी लम्बी आयु बख्शे।

वैसे भी उसे एक बार जीवनदान परमात्मा ने ही दिया जब राजीव गांधी ने मेरी देवदूत की तरह मदद की थी। 1984 के चुनाव के दौरान जब मैं किसी कार्यवश दिल्ली था तो मेरे पीछे चुनाव कैम्पेन रणदीप ने शुरु कर दिया। यह उसकी शुरुआती कोशिश थी कि उसे हैपेटाईटस बी हो गया। उन दिनों हैपेटाइटिस बी लगभग लाईलाज बीमारी थी। रणदीप की हालत इतनी खराब हो गई थी कि बेहाश हो गए और लगभग कोमा की स्थिति हो गई थी। तब पी.जी.आई. के डॉक्टरों ने एक इंजेक्शन लिखा जो उस वक्त

इंग्लैण्ड मे ही मिल सकता था। तब राजीव जी ने आनन-फानन मे अपने किसी पायलट मित्रा से फोन पर बात की तथा इंग्लैण्ड से इंजेक्शन मंगवाया। इंजेक्शन आते ही उसे चण्डीगढ़ भिजवाया गया। डॉक्टरो ने इंजेक्शन को लगाया जो परमात्मा की कृपा से संजीवनी बूटी की तरह कारगर रहा और रणदीप को परम-पिता परमात्मा की कृपा और राजीव गांधी के सहयोग से जीवनदान प्राप्त हुआ।

उस वक्त मैंने चुनाव बीच में ही छोड़ दिया था। पूरे नरवाना हल्के के लोग चिंतित हो गये थे। मेरे विरोधियों ने भी रणदीप के स्वस्थ होने की कामनाएं की थी और हल्के के लोगों परिचितों, मित्रों रिश्तेदारो की दुआएं रणदीप के जीवन-दीप के रूप प्रकट हुई। यह प्रकरण मेरी मां की मौत के बाद का मेरे जीवन का सबसे भयानक समय के रूप मे रहा। मित्रो! मैंने जीवन मे पुण्य कर्म भले ही ना किये हो पर मैंने पापकर्म भी नही किये। मैंने किसी का दिल नही दुखाया। किसी का शोषण नही किया। किसी को नाजायज तंग नही किया और मित्रो! मै ये भी मानता हूँ कि यदि जीवन मे सुख-सम्पदा, ऐश्वर्य आदि वस्तुओ को देने वाला परमात्मा है तो उसने मुझे किसी वस्तु की कोई कमी भी नही होने दी। लेकिन! मै यह जरूर कहूंगा कि उसने मेरी मां को बचपन मे ही मुझसे छीनकर मेरे साथ बड़ा अन्याय किया था। परन्तु अब मै परमात्मा से ज्यादा नाराज नही हूं क्योंकि उसने शायद उसी एवज में मुझे ये सब बख्शा हो।

खैर! मित्रो रणदीप की शादी दिसम्बर 1991 को हिसार जिले के डाबड़ा गांव में चौ. शमशेर सिंह की सुपुत्री गायत्री देवी के साथ हुई। बिटिया गायत्री बलराम जाखड़ की दोहती है। बलराम जाखड़ का मकान हमारे पंचकूला वाले मकान के पास ही होता था। बिटिया गायत्री का जन्म भी पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में हुआ था तथा ग्रेजुएशन भी उसने चण्डीगढ़ से ही पूरी की। बलराम जाखड़ ने मुझसे जब रिश्ते की पेशकश की तो मैंने कहा बेटे से पूछ कर बताऊंगा। जब रणदीप से बात की तो रणदीप ने कहा - मेरी मां जैसा चाहेगी, वैसा ही होगा। इस प्रकार यह एक पूर्णतया पारिवारिक शादी थी। मेरे तीनों बच्चों के स्वभाव और संस्कारों पर मैं नाज कर सकता हूं वे सदा अपने परिवार की गरिमा और मम्मी-पापा के सम्मान का ख्याल रखते हैं। मेरे दो पोते है अर्जुन और आदित्य। अर्जुन बारहवीं कक्षा और आदित्य सातवीं कक्षा का छात्र है। अर्जुन उसकी दादी पर गया है तथा आदित्य का स्वभाव बिल्कुल मेरे जैसा है। अर्जुन रिजर्व नेचर का तो आदित्य जौली मूड का है। अर्जुन केवल काम करता है, पढ़ता है। आदित्य खूब खेलता है, मस्ती करता है उसे खेतों में जाना भी अच्छा लगता है। अर्जुन से मिलना-जुलना आसान नहीं, जबकि आदित्य किसी के साथ भी घुल-मिल जाता है। बहुत प्यारे हैं मेरे पोते।

रणदीप ने सुप्रीम कोर्ट से वकालत की शुरुआत की। रणदीप की शादी के बाद मैं, उसकी मां और बिटिया गायत्री चाहते थे कि वह वकालत करे, खूब नाम कमाये और आराम से अपने

बच्चों के साथ जीवन व्यतीत करे। राजनीति में वह केवल और केवल अपने निर्णय से आया। उसने बड़े टफ जॉब को सिलेक्ट किया।

मित्रो! मेरे परिवार में और मेरे जीवन की संचित सम्पत्ति में आज मेरे पास सबसे अनमोल पूंजी के रूप में मेरे अपने पोते अर्जुन-आदित्य और मेरे दोहते गौरव दलाल, विक्रम चौधरी, दोहती प्रियंका और पड़ दोहता अहन् है।

वकालत एवं व्यवसाय

मित्रो! 1957 में मैंने जालंधर के यूनिवर्सिटी लॉ कॉलेज से वकालत की परीक्षा पास कर ली थी और सितम्बर 1957 में ही उच्च न्यायालय से लाइसैंस प्राप्त कर लिया था। मैंने इन्द्रसिंह श्योकन्द के साथ मिलकर अपनी वकालत शुरु की। इन्द्रसिंह श्योकन्द नरवाना क्षेत्रा के विधायक भी थे। वे बड़े जहीन और सुलझे हुए आदमी थे। उनकी कार्यव्यस्तता के कारण मुझे वकालत और मुकदमों की पैरवी का लाभ मिला। उनके पास खूब मुकदमे रहते थे फलतः मैंकम समय में ही अच्छा वकील बन गया। उनकी अनुपस्थिति में मैंने जटिल मुकदमों को भी लड़ना शुरु कर दिया मसलन मर्डर मिस्ट्री से जुड़े केस आदि। उस समय मैंनरवाना बार एसोसिएशन का दसवां वकील था। उस जमाने में नरवाना के वकील ट्रायल केस के लिए जीन्द जाते थे। छोटे केसों की सुनवाई नरवाना में ही तथा बड़े केसों की सुनवाई जींद में होती थी। अतः प्रत्येक वकील को दो जगह केस लड़ने होते थे। तब 1957 से लेकर 1966 के अंत तक मैंने खूब मन लगाकर वकालत की। 1967 में जब मैंनिर्दलीय विधायक बना तो मैंने अपना वकालत का लाईसैंस रद्द करवा लिया था लेकिन फिर दोबारा 1968 में मैंने वकालत शुरु कर दी थी।

मित्रो! 1968 में हरियाणा में उपचुनाव हुए थे। तब मैं एक बार फिर निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव में उतरा। तब

कांग्रेस की टिकेट पर चौ. नेकीराम जी डूमरखा वाले प्रत्याशी थे। तब मैं चुनाव हार गया था और चौ. नेकीराम चुनाव जीते थे। पुरानी तहसील उस समय बाजार के बीच में थी। मेरा नतीजा सुबह पांच बजे निकला था। गर्मियों के दिन थे। तब मैं और मेरे पांच-सात साथी पैदल ही मेरे आर्य उपनगर वाले निवास पर चले गए। सब बाहर वाले कमरे में बैठे और चाय-पानी पीया। मेरे मित्रागण अपने-अपने घर चले गये। मैं अन्दर गया नहाया-धोया और सुबह का नाश्ता करके सात बजे ही कचहरी में पहुंच गया।

मुझे आज तक वो दिन और उसकी ताजगी ज्यों की त्यों याद है। मैं उस दिन बहुत ज्यादा खुश था। क्यूं था ये पता नही। पर बड़ी स्फूर्ति, उत्साह और अजीब सी खुशी छाई हुई थी। चुनाव हारकर मुझे बहुत खुशी हुई, मेरा सारा बोझ उतर गया था। मुझे लगा कि या तो लोग मुझसे खुश नही है या फिर लोगों ने मेरे साथ धोखा किया है। यदि लोग मुझसे खुश नही है तो अच्छा ही हुआ और यदि लोगों ने विश्वासघात किया है तो और भी अच्छा हुआ। उस वक्त मैं राजनीति में नया था। मैंने सोचा चलो किस्सा खत्म अब वकालत करेंगे और पैसे कमाएंगे। तब दोबारा फिर रेगुलर प्रैक्टिस शुरु कर दी।

वकालत के उन तीन चार सालों में मैंने बहुत पैसे कमाए बहुत अच्छी वकालत चली थी मेरी उन दिनों। चुनाव हारने के बाद मैंने मकान बनाना शुरु कर दिया। तब जितने पैसे रोज मकान की चिनाई पर खर्च होते उससे कई गुना रोज मैं वकालत से कमाकर

लाता था। वर्तमान में जो नरवाना वाला मकान है ये तभी का बनाया हुआ है। उन्ही दिनों में मैंने भारत-भ्रमण का विचार बनाया। 1969 के अक्तूबर-नवम्बर की बात है शायद। मै, जगदीश राय, कृष्ण कुमार जो बाबू काकूराम का पुत्रा है हमने नरवाना से एक अम्बैसडर कार को टैक्सी के तौर पर लिया तथा बाई रोड़ घूमने चल पड़े बम्बई के लिए। हम गये अलग रास्ते से तथा आये अलग रास्ते से। खूब इन्जॉय किया और नई-नई जगहों तथा लोगों का अवलोकन किया।

मित्रो! जब मैंने वकालत शुरु की तो नरवाना मे एक महेन्द्रू नाम के जज होते थे, सब जज फर्स्टक्लास। महेन्द्रू जी जालंधर के पास कपूरथला के रहने वाले थे। वो मेरे पर्सनल मित्रा बन गए थे। उम्र में तो वो मुझसे बड़े थे लेकिन मेरे व्यवहार और तौरस्तरीकों को बहुत पसंद करते थे। उन्होंने मुझे बहुत काम सिखाया। मै कोई गलती करता या किसी बात का पता नही होता तो वे मुझे बहुत सिखाते थे। मेरे घर भी उनका आना-जाना था। हमारे बच्चे भी एक-दूसरे के घर आते-जाते थे। एक प्रकार से पारिवारिक संबंध जैसे थे। उसके बाद भी मेरे कई जज साहिबों से ताल्लुकात रहे, परन्तु मैंने एक बात सदा ध्यान में रखी की मैंने कभी किसी जज की जान पहचान का अपनी वकालत में नाजायज फायदा नही उठाया। कभी किसी जज को किसी केस के विषय में सिफारिश नही की। ना ही किसी क्लाईंट को कभी इस प्रभाव में लिया कि मेरी फलां जज साहिब के साथ जान पहचान है। मैंने बड़ी साफ-सुथरी

वकालत की। पूरी कचहरी में जितने केस होते उसके आधे मेरे पास तथा आधे बाकी के वकीलों के पास होते थे। इसका कारण सरप्लस जमीनों के केस थे। सरप्लस जमीनों के सारे केस मेरे पास ही होते थे क्योंकि मेरे पिता जी के नाम बहुत ज्यादा जमीन थी। (लगभग 1400 बीघे)। लोगों को लगता था कि ये अपनी जमीन बचाने के लिए कोई ढ़ील अथवा कोताही नही बरतेगा। उस वक्त ये सच्चाई भी थी। उस मामले में मैंने बहुत पढ़ा खूब तैयारियां की। सरप्लस जमीन के कानून और मुकदमों में लोग पैसे भी खूब देते थे क्योंकि मामला जमीन जायदाद से जुड़ा था। उन दिनों मैं रात के दो-दो, तीन-तीन बजे तक पढ़ता था और रणदीप की मां मुझसे बहुत नाराज होती। वकालत व्यवसाय के दम पर ही मैंने सत्तर के दशक में सोनीपत और गोहाना के दो सिनेमाओं में हिस्सेदारी की। सोनीपत के तराना थियेटर और गोहाना के पूनम थियेटर में मैंने हिस्सेदारी की थी जो मेरी वकालत के साथ अतिरिक्त व्यवसाय के रूप में रहे। मुख्य व्यवसाय हमारी तब भी कृषि था आज भी कृषि ही है। पैतृक जमीन में हम छहों भाईयों के नाम चालीस-चालीस एकड़ जमीन इन्द्राज है तथा 40 एकड़ जमीन मेरे पिता जी ने अपने सातवें हिस्से में रखी। इस प्रकार मेरे पिता जी कुल 280 एकड़ जमीन के मालिक थे। मित्रो! 1977 में कांग्रेस पार्टी से विधायक बनने के बाद मैंने नरवाना के अपने सारे केस मेरे साथी वकीलों को दे दिए तथा स्वयं मैंने चण्डीगढ़ हाईकोर्ट में प्रैक्टिस शुरू कर दी। एम.एल.ए. हॉस्टल में मुझे दस नं. फ्लैट अलॉट हुआ था। वहां मैंने

अपनी लाईब्रेरी स्थापित कर दी थी। उसमें काफी जगह थी। मैं रहता भी वहीं पर था। ग्राउण्ड फ्लोर पर होने के कारण उसके आगे-पीछे की जगह का भी अच्छा प्रयोग हो जाता था। मैंने वहां लगभग दो साल तक अपनी वकालत जारी रखी। 1978 में इंदिरा जी ने अपनी अलग पार्टी इंदिरा कांग्रेस के नाम से शुरु की। तब हरियाणा में इंदिरा कांग्रेस का कोई दफ्तर तक नहीं था। तब श्रीमती इंदिरा जी ने मुझसे अपनी पार्टी का दफ्तर खोलने का आग्रह किया। मैंने कहा मेरे पास और तो कोई जगह नहीं है, मैं केवल अपने एम.एल.ए. फ्लैट को ही इस काम के लिए प्रयोग कर सकता हूं। तब मैंने एक बार फिर अपने हाईकोर्ट वाले सारे केस अपने साथियों को दे दिए। इंदिरा जी के आग्रह पर वकालत छोड़कर मैं फुलटाइम उनका सिपाही हो गया। अब मुझे दफ्तर चलाने के लिए स्टाफ की जरुरत थी और स्टाफ तो सिर्फ कैडर पर ही काम कर सकता था। इसलिए मैंने पुरानी कांग्रेस के अपने कुछ साथियों से मेरे कार्यालय में काम करने का अनुरोध किया।

उनमें से चुन्नीलाल अम्बा जो दफ्तर सचिव थे, एक सुरेन्द्र मेहता, एक कलर्क और एक स्टैनो था। इन चार-पांच लोगों को मैं अपने फ्लैट पर लेकर आया तथा उनको कहा देखो भाई। अभी मेरे पास तुम्हें देने के लिए पैसे नहीं हैं। परन्तु जब मेरे पास आएंगे तो आपको समेत बोनस दे दिए जाएंगे। उन लोगों ने मेरे अनुरोध को स्वीकार कर बड़ी मेहनत से काम करना शुरु कर दिया। बाद में सब कुछ ठीक हो गया था।

हमने कांग्रेस को हरियाणा में दोबारा खड़ा किया। मैं इंदिरा जी को हरियाणा में कई स्थानों पर लेकर गया। लोगों ने हमारा खूब स्वागत किया तथा बड़े जोर-शोर से कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। लोगों ने हमारा नोटों से स्वागत किया जिनसे हमने दफ्तर के खर्चों को पूरा किया तथा दफ्तर के लिए कुछ जरूरी टाईपिंग मशीन तथा फैक्स मशीन आदि लेकर आए। अंततः हरियाणा में इंदिरा कांग्रेस ही असल कांग्रेस बन गई थी तथा बाकी सब नकली रह गए थे। मित्रो! इंदिरा जी के आग्रह पर एक वकील फुल टाईम नेता बन गया और इस प्रकार मेरा वकालत व्यवसाय का यह सफर पूरा हो जाता है।

कम्यूनिस्ट विचारधारा से जुड़ाव

मित्रो! मेरी मां की मृत्यु के पश्चात से ही मैं विरोधी प्रकृति और उग्र स्वभाव का हो गया था। लेकिन मैंने अपनी इस प्रकृति को नकारात्मक दिशा में या नुकसान के लिए कभी प्रयोग नहीं होने दिया। मेरे दिल में शुरु से ही रियासती व्यवस्था और अंग्रेजों के राज के प्रति रोष था। यही वजह थी कि स्कूली शिक्षा के समय से ही अंग्रेज विरोधी और रियासत विरोधी गतिविधियों से जुड़ गया था। इसी वजह से पटियाला रियासत ने मुझे स्कूल से बेदखल कर दिया था। इस बात का जिक्र मैं स्कूली शिक्षा वाले अध्याय में कर चुका हूँ।

मित्रो! स्कूली टाईम में स्टुडैंट कांग्रेस से जुड़ने के बाद मुझे संगठन में काम करने का चस्का लगा। एक्चुअली जब मैं स्टेट हाई स्कूल जीन्द में कक्षा नौवीं दसवीं का छात्र था तो वहां एक मास्टर जी होते थे बृजमोहन, जो कौम के पंजाबी थे और पाकिस्तान से आए थे। वे कम्यूनिस्ट थे और उनके विचारों का मुझ पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। मैं समझता हूँ कि कम्यूनिस्ट विचारधारा से जोड़ने में उनका प्रभाव अधिक रहा।

इसके पश्चात् जब मैं 1951 में रोहतक के सरकारी कॉलेज में गया तो वहां मेरी मुलाकात बाबू अनंत स्वरुप मित्तल से हुई।

मैंने उनको छात्रा राजनीति मुहिम और मास्टर बृजमोहन के बारे में बताया तो उन्होंने मुझे सीधे तौर पर ही कम्यूनिस्ट पार्टी का मैम्बर बना दिया। कम्यूनिस्ट पार्टी के संविधान में सीधे मैम्बर बनाने की व्यवस्था नही है। पहले कैण्डिडेट मैम्बर बनाया जाता है तथा उसकी गतिविधियो की जांच-परख करने के बाद सदस्य बनाने का प्रावधान है। परन्तु बाबू अनंत स्वरुप ने मुझे सीधे तौर पर मैम्बर रिकमैण्ड किया। बाबू अनंत स्वरुप उच्च न्यायाल चण्डीगढ़ में वकालत करते रहे। उनकी सैक्टर 2 में कोठी थी जहां उनका स्वर्गवास हुआ। उनके पुत्रा राजेन्द्र स्वरुप भी उच्च न्यायालय चण्डीगढ़ में वकालत करते है। वे मेरे अच्छे मित्रों में से एक है क्योंकि हम लॉ कालेज जालंधर में इकट्ठे पढ़ते थे।

मित्रो! कॉलेज में हम छोटे-मोटे धरने जुलूस करते रहते थे। मीटिंग करते, पर्चे छपवाते। ये सारे रुटीन वर्क होते। परन्तु एक विरोध प्रदर्शन मुझे आज भी याद है, जिसमें हमारी गिरफ्तारी के वारंट निकले थे।

मित्रो! चौ. लहरी सिंह ज्वाइंट पंजाब के एक मिनिस्टर होते थे। वे सोनीपत के रहने वाले थे। उस जमाने में डाकुओं का काफी बोलबाला रहता था। उन्होंने डाकुओं के खिलाफ एक सरकारी मुहिम चलाई थी। सोनीपत, गोहाना और रोहतक में बहुत डकैतियां होती थी। उन्होंने स्पेशल पुलिसबल बुलवाकर डाकुओं का तो सफाया करवा दिया परन्तु आम जनता इस एक्शन से कितनी पीड़ित हुई इसका उन्होंने कोई ध्यान नही किया। उस वक्त जनता

कुछ तो डाकुओं से पीड़ित थी फिर कुछ पुलिसिया कार्यवाही की भी शिकार हुई। खेतों में घोड़े दौड़ते रहते। घरों में तलाशी के नाम पर सामान बिखरा दिया जाता । विरोध करने पर बर्बरता से पिटाई की जाती। हम कॉमरेड इस बर्बर कार्यवाही के विरोधी थे तथा गांवों में इस कार्यवाही के खिलाफ जन-जागृति अभियान के रूप में पर्चे बंटवाए। हमने कहा कि सरकार भी डाकुओं की तरह ही व्यवहार कर रही है तब मेरे और दूसरे कॉलेज छात्रों के खिलाफ गिरफ्तारी के वारंट जारी हो गए। स्टुडैंट थे और बागी भी थे इसलिए भूमिगत हो गए क्योंकि कॉलेज से नाम कटने का डर था तथा घर वालों की पिटाई का भी। ये 1951-52 की बात है। तब हम बादली गांव के जमींदार चौ. रणधीर सिंह के यहां जाकर रहे थे। उसके बेटे के साथ हमारी दोस्ती थी। तब लोगों ने हमारी मुहिम का काफी समर्थन किया। इसके बाद जो एक बड़ी मुहिम कॉमरेडशिप विचारधारा के अन्तर्गत की गई वो मेरे वकालत शुरु करने के बाद की गई।

मित्रो! 1957-58 में पंजाब सरकार के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों ने किसानों पर एक टैक्स लगा दिया। इसका नाम था बैटरमैण्ट लेवी टैक्स। यह कर नहरी पानी लगने वाली जमीनों पर 150 रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से लगाया गया। इसके खिलाफ कम्यूनिस्ट पार्टी की इकाई किसान सभा ने गिरफ्तारियां देने का आह्वान किया। इसका नेतृत्व हरकिशन सिंह सुरजीत कर रहे थे।

मित्रो! तब मैंने और कॉमरेड इन्द्रसिंह श्योकन्द ने जीप पर

माईक लगाकर नरवाना हल्के के सभी गांवों का दौरा किया तथा बैटरमैंट लेवी टैक्स के विरोध में जनसभाएं की, पर्चे बंटवाए तथा लोगों को गिरफ्तारी के लिए तैयार किया। उस वक्त एक लाख से अधिक किसानों ने गिरफ्तारियां दी थी। ये 1959 की बात है तब मैं भी गिरफ्तार हुआ था। नरवाना क्षेत्र के नारायणगढ़ और ढ़बी टेकसिंह के बहुत सारे जमींदार गिरफ्तार हुए थे। नारायणगढ़ और ढ़बी टेकसिंह मे मुजारे होते थे। उन्हे हमने लैण्ड सीलिंग एक्ट के तहत भूमि मालिक बनवाया था। इस विद्रोह में कॉमरेड इन्द्रसिंह श्योकन्द, गुरथली के जोगिन्द्र सिंह तथा डॉ. उत्तम सिंह भी गिरफ्तार हुए थे।

मित्रो! मेरे गिरफ्तार होने का वाकया भी बड़ा दिलचस्प है। संगरूर का एस.पी. चौ. दिलीप सिंह था जो दौलतपुर का रहने वाला था तथा मेरे रिश्तेदारी में पड़ता था। संगरूर लगने के बाद जब वो पहली बार नरवाना आया तो नरवाना थाने में एक पंडित जी थे जो ट्रैफिक इंस्पैक्टर थे, उसको उन्होंने मेरे पास भेजकर कहलवाया कि एस.पी. साहिब आपसे मिलने आएंगे। मैंने संदेश भिजवाया कि उनका स्वागत है और रात को खाना वो मेरे घर पर ही खाएं। तो वो आए और रात का खाना खाया। उन्होंने मुझे किसान आन्दोलन से दूर रहने की सलाह दी। इसके बाद फिर उन्होंने मुझे एक बार जींद तथा दूसरी बार संगरूर बुलवाया। दूसरी बार उन्होंने मुझे साफ-साफ कहा कि यदि आप विरोध-प्रदर्शन तथा जलसे-जुलूसों भाग लेते रहेंगे तो मुझे आपको मजबूरन गिरफ्तार करना पड़ेगा।

तब आपके पिता जी और घरवाले मुझसे नाराज होंगे। मैंने कहा कि आप मुझे गिरफ्तार ना करके मेरा नुकसान कर रहे है मै तो स्वयं चाहता हूँ कि मेरी गिरफ्तारी हो। खैर! इसके दो-तीन दिन बाद ही सुबह के पांच बजे पुलिस ने मेरे घर पर दबिश दी। उस वक्त मै आर्य उपनगर वाले मकान में किराए पर रहता था। इसके दोनों और गली लगती थी। उस वक्त शहर थाने का इंचार्ज इंसपैक्टर मोदन सिंह था। उसने दोनों दरवाजों पर सिपाही खड़े किए तथा ठीक पांच बजे दस्तक दी। उस वक्त मेरी पत्नी को पहली संतान लड़की के रूप में हुई थी जिसका नाम मधु है उस दिन वह मात्रा तीन दिन की थी।

गिरफ्तारी का आभास और तैयारी पहले से ही थी इसलिए एक थैले में मैंने कुछ जरूरी कपड़े और तौलिया पहले ही डालकर रख लिए थे। मकान का बाहर वाला कमरा ड्राईंगरुम के रूप में प्रयोग होता था। वहां मेरा भाई तारीफ सिंह तथा मेरे मामा का लड़का भरपूर सिंह सोया हुआ था। मैंने अपने भाई तारीफ सिंह को जगाया और कहा कि तुम गाड़ी की व्यवस्था करके अपनी भाभी और बच्ची को इनके ननिहाल पहुंचा देना। ऐसा कहकर मै बाहर आया और गिरफ्तारी दे दी।

उस वक्त आर्य उपनगर से थाने तक हम पैदल ही आए। मैं अकेला ही नारा लगाता और खुद ही उसका जवाब देता। भाखड़ा टैक्स नही देंगे- नही देंगे। जेलों को भर देंगे-भर देंगे। थोड़ी देर बाद पकड़कर डॉ. उत्तम सिंह को भी ले आए। हमें तीन बजे

तक थाने के बाहर बिठाकर रखा और फिर संगरूर जेल भेज दिया तथा मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया। वहां से हमें संगरूर की नई जेल भेज दिया। डॉ. उत्तम सिंह और जोगिन्द्र सिंह मेरे साथ थे। तब मैं दो महीने संगरूर जेल में तथा पन्द्रह दिन जीन्द जेल में रहा।

- मित्रो! उस वक्त तक मैं कम्यूनिस्ट पार्टी की सभी आर्गेनाइजेशन्ज से जुड़ा था। उस वक्त वर्ल्ड पीस कांग्रेस होती थी जिसके जनरल सैक्रेटरी रमेश चन्द्र होते थे। तब मैं उसका राष्ट्रीय उपप्रधान होता था।

- इण्डो जीरिया - जर्मन डेमोक्रेटिक बॉडी का मैं प्रान्तीय जनरल सेक्रेटरी रहा हरियाणे का।

- 1972-80 के बीच वर्ल्ड पीस कांग्रेस द्वारा आयोजित किए गए दुनिया के अर्न्तराष्ट्रीय प्रोग्रामों में मैंने चार बार भाग लिया। पहला मास्को में। दूसरा हंगरी-बुडापेस्ट में। तीसरा सोफिया में तथा चौथी बार श्री राजीव जी ने कांग्रेस डेलीगेट के तौर पर भेजा मास्को में।

मित्रो! 1984 में श्री राजीव गांधी जी ए.आई.सी.सी के अध यक्ष थे और भारत के प्रधानमंत्री भी थे। उन्होंने मुझे डॉ. रफीक वर्मा महाराष्ट्र और मिस वर्मा जो मध्यप्रदेश की पी.डब्ल्यू.डी. मिनिस्टर थी को कांग्रेस डेलिगेट के तौर पर मास्को भेजा जहां कम्यूनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो ऑफिस में सोवियत यूनियन के पार्टी पदाधिकारियों के साथ वैचारिक मंत्राणा हुई। 1982 में जब स्व. इंदिरा गांधी जी प्रधानमंत्री थी और ए.आई.सी.सी की अध

यक्षा भी थी तब वे सोवियत यूनियन (रूस) के दौरे पर गई थी। तब राजीव जी कांग्रेस पार्टी के महामंत्री थे। वे भी उनके साथ गए थे। उस समय रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी और हिन्दुस्तान की कांग्रेस पार्टी के बीच एक संधि हुई थी, जिसमें दोनों पार्टीयों के बीच डेलीगेशन्ज के आदान प्रदान का भी एक प्रस्ताव था। उसी संधि के तहत हमें कांग्रेस पार्टी की ओर से स्व. राजीव जी ने डेलिगेट के तौर पर मास्को भेजा था।

मित्रो! यह कम्यूनिस्ट पार्टी और कांग्रेस के बीच संधि प्रस्ताव का पहला और अंतिम डेलिगेशन था।

मित्रो! मै कम्यूनिस्ट पार्टी की नीतियों से पहले ही मुंह मोड़ चुका था। 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो कम्यूनिस्ट पार्टी अपना स्टैण्ड साफ नही रख पाई और वो सी.पी. आई. सी.पी.एम. में बंट गई। चीन की तरफ नरम रूख को देखते हुए मैंने तुरन्त पार्टी छोड़ने का मन बना लिया तथा 1962 में ही कम्यूनिस्ट पार्टी के सभी पदों से त्यागपत्र देकर पार्टी को अलविदा कह दिया। अतः 1951 से 1962 तक के सफर को आप मार्क्सवाद विचारधारा से प्रभावित कह सकते है।

किसान संघर्ष

मित्रो! मैं किसान का बेटा हूं या मैं किसान हूं ये कोई बार-बार दोहराने वाली बात नहीं है। बचपन से लेकर जवानी तक मैं गांव-समाज से जुड़ा रहा हूं राजनीति में आने के बाद से लेकर आज तक मैं अपने गांव और खेतों से जुड़ा हूँ मुझे गांव की सारी स्मृतियां, गांव की गलियां, खेत, गांव के बच्चे, बड़े-बूढ़े सब अच्छे से स्मरण है। गांव की छोटी-छोटी घटनाओं को रोज सुनते है उनमें रूचि लेता हूं। शादी-गमी में पहुंचने की कोशिश करता हूं। नहीं पहुंच पाता हूं तो मेरी जगह मेरे भाई पहुंचते हैं। यानि कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि गांव-समाज में अपनी उपस्थिति आज भी अनिवार्य रूप से दर्ज करवाता हूं।

मित्रो! मेरी मां की मृत्यु के पश्चात से मैं थोड़ा कारुणिक हो गया। मेरा लगाव न जाने क्यों बेसहारा, बेबस व मजलूम लोगों की तरफ रहने लगा। किसान मुझे हमेशा से ही मजलूम दिखाई देता है। बेचारा बेबस और लाचार। जब तक फसल पक कर घर नहीं आ जाती तब तक प्रकृति की मार का डर और जब पक कर घर आ जाती है तो सरकार की नीतियों और फसलों के भाव के अत्याचार का डर। इसलिए मैं हमेशा किसान को बड़ी दयाभावना के साथ देखता हूं।

मित्रो! राजनैतिक जीवन कभी मेरे कैरियर का लक्ष्य नहीं

था। मैं तो वकालत ही करना चाहता था। परन्तु अचानक एक किसान आन्दोलन में हिस्सा लेने के बाद मैं नेतृत्व के सफर पर निकल पड़ा। इस सफर की शुरूआत कम्यूनिस्ट पार्टी की पगडंडियो से बैटरमैंट लेवी टैक्स के विरोध की मुहिम से हुई थी जो बाद में हिन्दुस्तान के किसान, खेत-मजदूर कांग्रेस के अध्यक्ष पद तक पहुंची।

मित्रो! राजनीतिक सफर में भी मेरी सारी कोशिशें और मेरे मंत्रालय भी किसान जीवन के इर्द-गिर्द ही रहे। सबसे पहले जब मैं 1967 में नरवाना क्षेत्र से निर्दलीय विधायक बना तब मैं कॉम्पेक्टिव विभाग का राज्य मंत्री बना जो खेती किसानो की जरुरतों को पूरा करने में सहायक था। 1967 में ही मुझे पंचायत एवं विकास विभाग का पद दिया गया था तथा इसके साथ ही साथ बाद में मुझे बिजली-पानी के मंत्रालय का भी राज्यमंत्री बनाया गया।

मित्रो! इसके बाद मैं भजनलाल मंत्रीमण्डल में कृषि मन्त्री बना तथा बाद में मैं बिजली-पानी महकमे का मंत्री बना। उस वक्त परिस्थितियां चाहे जो भी और जैसी भी रही हों लेकिन लोगों को आज भी याद है कि मैंने कभी नहरों में पानी कम नहीं होने दिया तथा बिजली तो उस वक्त रहती ही चौबीसों घण्टे थी।

मित्रो! 15 जनवरी 1981 को मैं हरियाणा सरकार का कृषि मंत्री बना था और 1981 में ही बलराम जाखड़ जी ने मुझे कृषक समाज हरियाणा का अध्यक्ष बना दिया। बलराम जाखड़ जी इस संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। 1981 से 2009 तक मैं कृषक

समाज हरियाणा के अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहा। वर्ष 2009 में हमने ऑल इण्डिया कार्यकारिणी की कन्वैशन करनाल में आयोजित की। मैंने तब इस्तीफा देकर तेजेन्द्र पाल मान को अपने उत्तराधिकारी के रूप में कृषक समाज के प्रदेशाध्यक्ष पद पर मनोनीत करवाया। मित्रो! डॉ. पंजाब राव देशमुख कृषक समाज के संस्थापक थे। वे पं. जवाहर लाल नेहरु के समय हिन्दुस्तान के कृषि मंत्री होते थे। बलराम जाखड़ ने ही सबसे पहले गेहूं के एम.एस.पी. में 100 रुपये की वृद्धि की थी जो उस समय तक की सब वृद्धियों में सर्वाधिक थी। मित्रो! उन्हीं के पदचिन्हों पर चलते हुए हमने किसान और मजदूरों के हितों में संघर्ष शुरु किया। तब बलराम जाखड़ जी कहा करते थे कि हरियाणा का कृषक समाज पूरे भारत के कृषक समाज से ज्यादा सक्रियता से काम कर रहा है।

मित्रो! 1986 में राजीव लौंगोवाल समझौते के तहत इराडी ट्रिब्यूनल बना था जिसने ये फैसला करना था कि क्या पंजाब की दरियाओं में हरियाणा के पानी की हिस्सेदारी बनती है? इसमें मि. वी.वी. इराडी जज-सुप्रीम कोर्ट, वी. जार्ज जज केरल उच्च न्यायालय तथा मि. अहमदी जो गुजरात उच्च न्यायालय के जज थे, शामिल थे। इस ट्रिब्यूनल के सामने मैं हरियाणा प्रान्त की ओर से पैरोकार था। हमने कपिल सिब्बल को हरियाणा सरकार की ओर अपना वकील नियुक्त किया था। मैं रोज ट्रिब्यूनल की मिटिंग के पश्चात पूरे घटनाक्रम की जानकारी लेता तथा प्रैस कान्फ्रैंस में उसको विस्तार से बयान करता था।

मित्रो! इस ट्रिब्यूनल (इराडी ट्रिब्यून मैम्बर्स) को मैंने पूरे प्रान्त के सूखे क्षेत्रों में घुमाया। मैंने उनको गुड़गांव, रिवाड़ी, महेन्द्रगढ़ तथा नारनौल के सूखे गांवों का दौरा करवाया जहां आदमी तो क्या पशुओं के पीने तक के पानी की किल्लत थी। धीरे-धीरे वे इस बात से सहमत हो गए थे कि वास्तव में हरियाणा मे पानी की बहुत तंगी है और हरियाणा को पंजाब की दरियाओं से पानी दिया जाना चाहिए।

मित्रों! मैंने इस ट्रिब्यूनल का पंच सरपंचों द्वारा बड़ा मान-सम्मान करवाया। हरियाणा कि दशा, लोगों के व्यवहार और आव-भगत से प्रसन्न होकर उन्होंने हरियाणा के पक्ष में अपना फैसला सुनाया। बाद में पंजाब सरकार इसे लेकर सुप्रीम कोर्ट चली गयी वहां यह अभी तक विचाराधीन है।

मित्रो! मेरे 1984-1987 के कार्यकाल के दौरान ही मैंने रावी-ब्यास के पानी का हिस्सा हरियाणा में लाने के लिए 90 कि. मी. लम्बी नहर का निर्माण पंजाब के क्षेत्रा में करवाया। इस निर्माण का खर्च भारत सरकार द्वारा वहन किया गया था। मै प्रत्येक सप्ताह इस नहर के निर्माण कार्य को देखने के लिए पंजाब जाता था। उस समय पंजाब में उग्रवाद चरम सीमा पर था। कर्फ्यू लगने के बाद भी मै निर्माण कार्य को देखने   निर्बाध रूप से जाता था। उन्ही दिनों उग्रवादियों ने दो बार रोपड़ के समीप भाखड़ा मेन लाईन को पंजाब के क्षेत्रा में काटकर हरियाणा का पानी बंद कर दिया था। दोनों बार मैंने इस कटाव का निर्माण करवाया तथा

भाखड़ा मेन लाईन का पानी चालू करवाया। जिस समय हरियाणा में पानी आना बिल्कुल बन्द था तब मैंने पूरे प्रान्त में जमुना का पानी पहुंचाया ताकि उन इलाकों में कम से कम पीने के पानी की सप्लाई तो ना बन्द हो। इसमें मेरा अपना क्षेत्र नरवाना भी एक था।

मित्रो! इसी सन्दर्भ में मुझे एक और घटना याद आ रही है सन 1984 की जब माननीया इंदिरा गांधी जी के हत्याकाण्ड के पश्चात पूरे देश में दंगे भड़क गए थे। सब जगह कर्फ्यू लग गया था। दिल्ली में तो स्थिति और भी विकट हो गई थी। इत्तिफाक से मैं तब दिल्ली में ही था। मैंने दिल्ली प्रशासन से बाहर निकालने की प्रार्थना की तो उन्होंने मुझे हरियाणा सुरक्षित भिजवाया। मैं सीधे अपने गृहक्षेत्र नरवाना पहुंचा और आते ही पंजाब बैल्ट के सरदार गांवों ढ़ाबी, पिपलथा, हंसडहैर, रसीदां आदि में पहुंचा। नरवाना बिल्कुल पंजाब का पड़ोसी शहर है तथा नरवाना से 12-15 कि.मी. की दूरी पर ही शुरु हो जाता है पंजाब। मैंने वहां मेरे साथी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया और सरदार बिरादरी को खुले तौर पर अपने विश्वास में लिया। मैंने उनको जान-माल और सुरक्षा का भी आश्वासन दिया। यह इसी का परिणाम था कि पंजाब के बॉर्डर पर होने के बावजूद और सरदार बिरादरी के गांव होने के बावजूद मेरे गृहक्षेत्र नरवाना में और बार्डर के गांवों में एक भी घटना इस प्रकार से दर्ज नहीं हुई कि किसी प्रकार के भय के कारण सरदार बिरादरी प्रताड़ित हुई हो या उन्होंने पलायन किया हो। अतः

निष्कर्षतया कहा जा सकता है कि पंजाब हमारा पड़ोसी ह्नद्गंब्वाडीत्र्ह राज्य है और मुझे उससे कभी कोई भय नही रहा हमेशा ही मै भी उन्हें अपना ही समझता रहा हूं।

मित्रो! मैंने एक बात बहुत पहले ही शिद्दत से महसूस कर ली थी कि जब तक किसान की दशा में सुधार नही होगा तो प्रान्त तरक्की नही कर सकेगा और किसान दशा का सुधार केवल और केवल प्रधानमन्त्री जैसी बड़ी कलम से ही हो सकता है। और इसमें कोई दोराय नही कि मै जानता था कि मै कभी प्रधानमन्त्री बन नही पाउंगा। इसलिए मेरी नजर केवल नेहरू परिवार की ओर लगी थी कि यह काम केवल और केवल यही परिवार कर सकता है।

इसलिए मित्रो! मैइस परिवार को किसान के अत्यंत समीप लेकर आना चाहता था। मैउनको किसान की वास्तविक स्थिति से अवगत करवाना चाहता था। परन्तु विधाता की मर्जी को कोई नही जान सकता। जो काम मैमाननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी या श्री राजीव गांधी जी के हाथों करवाना चाहता था वो काफी विलम्ब से श्रीमती सोनिया गांधी जी के हाथों हुआ ।

मित्रो! मैंने 1996 की पार्लियामेण्ट मेंसबसे पहले हिन्दुस्तान के किसानों की दशा के मुद्दे को उठाया था। तब मैंने कहा था कि साहूकारों के कर्ज से तंग आकर देश के किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं। तब मैंने मांग की थी की ब्याज दरों में कटौती की आवश्यकता है तथा ब्याज माफी का सुझाव भी दिया था।

मित्रो! मैंने श्रीमती सोनिया गांधी के सामने भी इस बात

को रखा तथा उन क्षेत्रों की बकायदा सूची बनाकर दी जहां किसान आत्महत्याएं कर रहे थे। ये अपने आप में एक अजीब वाकया है कि तब अनेक लोगों ने तथा किसान हितैषी कहलाने वाले नेताओं ने मेरा मजाक उड़ाया तथा तेरी इस कवायद को राजनैतिक स्टंट करार कर दिया। मेरी मंशा किसान की दशा सुधारने की थी। मैं ये बात अच्छी तरह समझ चुका था कि जब तक किसान के सिर से ;ण का बोझ नहीं उतरेगा तब तक वह जीवन की पटरी से तालमेल नहीं बैठा पाएगा। मित्रो! 12 अक्तूबर 1998 को श्रीमती सोनिया गांधी जी मेरी बातों की सच्चाई से रूबरू होने के लिए नरवाना क्षेत्र में आईं। मैंने और मेरे साथियों ने उन्हें नरवाना क्षेत्र की 100 विधवाओं से मिलवाया तथा कुल तीन-सौ ऐसे किसान परिवारों की सूचि दी जिनमें से उनके सदस्य ने आर्थिक विषमताओं के चलते अपने जीवन को समाप्त कर लिया था।

मित्रो! एक कृषि वैज्ञानिक दल हमने हिसार कृषि विश्वविद्यालय से भी बुलवाया था जिसने तुलनात्मक अध्ययन कर एक शोध पत्र तैयार किया था कि वास्तव में कृषि घाटे का सौदा हो गयी है तथा किसान साल-दर-साल कर्जदार होता जा रहा है। इस वैज्ञानिक दल ने सैट हाऊस नरवाना में श्रीमती सोनिया गांधी को अपने शोध निष्कर्षों से अवगत करवाया।

मित्रो! ये अपने आप में एक विरोधाभासी तथा विडंबनापूर्ण तथ्य है कि कांग्रेस पार्टी के ही कुछ सीनियर लीडर्स ने मेरे इस कार्य की आलोचना की थी। बीरेन्द्र सिंह, भजन लाल, बंसीलाल सब कह

रहे थे कि सुरजेवाला राजनैतिक लाभ के लिए ये सब कर रहे हैं। बीरेन्द्र सिंह ने उस समय के जिला कांग्रेस अध्यक्ष परविन्द ढुल से बाकायदा प्रस्ताव पारित कर सोनिया गांधी को भिजवाया था कि हमारे जिले में एक भी किसान ने कर्ज से तंग आकर आत्महत्या नहीं की है और शमशेर सिंह सुरजेवाला झूठ बोल रहे हैं।

मित्रो! मैं अहसानमन्द हूं श्रीमती सोनिया गांधी जी का जिन्होंने मेरे ऊपर विश्वास किया तथा नरवाना क्षेत्र के लोगों के दर्द को अपनी आंखों से देखा। विधवा महिलाओं की करूणा परक बातें सुनकर श्रीमती सोनिया गांधी जी की आंखें भर आई थी। मैं जो संदेश और स्थिति उन तक पहुंचाना चाहता था तो वो वे नरवाना से लेकर गई।

जाते ही उन्होंने किसान खेत-मजदूर कांग्रेस के अलग प्रकोष्ठ का गठन किया तथा भारत के पूर्व कृषि मंत्री बलराम जाखड़ को इसका पहला राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया। मित्रो! यू पी ए सरकार के सत्ता में आते ही श्रीमती सोनिया गांधी ने मेरे उस सपने को हकीकत में बदल डाला जो उस वक्त तक पूरी कांग्रेस पार्टी का सपना बन चुका था। यू पी ए सरकार ने किसान हित के निर्णयों से ही अपने पहले कार्यकाल की शुरूआत की। एक ही कलम से हिन्दुस्तान के किसानों के लगभग 74 हजार करोड़ रुपये के ;ण माफ कर दिए। यूपीए सरकार ने ही 18 प्रतिशत ब्याज से 7 प्रतिशत तथा 7 प्रतिशत से सीधे 4 प्रतिशत तक ब्याज दरें कम करने का कार्य किया।

मित्रो! मैंने कभी अपने आपको किसान नेता या किसानों का मसीहा स्थापित करने की कोशिश नहीं की। मैं तो किसान का बेटा हूँ और किसान की किसी भी हालत में मदद करना चाहता था। यूपीए सरकार ने मेरी मन की मुराद को पूरा किया मेरे सपने को अपना लक्ष्य बनाया इससे बढ़कर गौरव की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है।

मित्रो! मैं पिछले बीस सालों से हरियाणा सरकार के माध्यम से किसान की गिरफ्तारी तथा किसान की जमीन नीलाम होने के कानून को बदलने की मांग करता आ रहा था। मित्रो! सबसे पहले मैंने पूछा था कि किसान के ;ण के ऊपर 12 प्रतिशत ब्याज दर और एक अमीर की गाड़ी पर 10 प्रतिशत ये कहां का न्याय है?

मित्रो! मैं अहसानमन्द हूं हरियाणा सरकार के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र हुड्डा का जिन्होंने मेरी बातों का समर्थन करते हुए अपनी कलम से किसान की गिरफ्तारी एवं जमीन नीलामी के काले कानून को समाप्त किया। मित्रो! बैंकों को ललकारते हुए मैंने सबसे पहले कहा था कि किसान की जमीन आज पच्चीस-तीस लाख रुपये प्रति एकड़ से अधिक है अतः ट्रैक्टर लोन के दरमियान रहन के लिए उसकी एक एकड़ से अधिक जमीन न रखी जाए। मेरे इसी तथ्य को हरियाणा सरकार ने अपने एजेण्डे में सर्वोपरी रखते हुए इसे लागू किया। भूपेन्द्र सिंह हुड्डा भी किसान सोच के मुख्यमंत्री है जो हमेशा किसान के नजरिए से ही परिस्थिति को देखते है यह सब संयोग की बात है कि ऊपर से नीचे तक की सरकार मेंएक समय

में एक साथ काम करने वाले लोगों में से अधिकतर एक ही विचारधारा और एक ही सपने को देखने वाले लोग काम कर रहे है। तभी तो इतने सारे किसान हित के निर्णयों को अमलीजामा पहनाया जा सका। पिछले पांच साल के कार्यकाल में यूपीए सरकार ने किसान हित में इतने बड़े और लाभकारी निर्णय लिए है। जितने कि इससे पूर्व की सभी सरकारों के कुल मिलाकर भी नही होते।

अतः मै कह सकता हूँ कि किसानों के लिए किए गए संघर्ष और उनसे मिले परिणामों से मै सन्तुष्ट हूं।

राजनैतिक सफर

मित्रो! मै पहले ही स्पष्ट कर चुका हूंकि विद्यार्थी जीवन मे, या वकालत के दिनो मे मैने कभी राजनीतिको इतनी गंभीरता से नही लिया। मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी किसान परिवार की है। ना कि-किसी राजनेता अथवा राजधराने की। हां स्कूली समय से लेकर कॉलेज और वकालत के समय तक मै नेतृत्व अवश्य करता रहा।

नेतृत्व विद्यार्थियो के हको का, नेतृत्व किसान के हको का नेतृत्व आम आदमी की पीड़ाओ का। लेकिन वो सिर्फ सरकार तक एक आवाज पहुंचाने का ही मकसद मात्रा था। किसी भी प्रकार से सरकार मे हिस्सेदारी या नेतागिरी की सोच तब तक मन मे नही थी।

मेरे पिता जी भी आम साधारण किसान की भांति मुझे पुलिस अफसर के रूप मे देखना चाहते थे। उन दिनो पुलिस नौकरी का बड़ा रुतबा होता था। आज एक इंस्पेक्टर का भी इतना भय नही होता जितना उन दिनो एक दरोगा का खौफ होता था। मेरी शादी नौवी कक्षा में हो चुकी थी। और मैने B.A. की कक्षा को पास कर लिया था। मेरे ससुर चौ. मान सिहं का पैप्सू (PEPSU) के मुख्यमन्त्री कर्नल सबीर सिहं के साथ कोई परिचय था। कर्नल सबीर सिंह महाराजा पटियाला के रिश्तेदार थे। मेरे ससुर ने कर्नल

साहब से मिलने का समय मांगा तो उन्होंने दोपहर के भोजन के समय मिलने को बुलवाया तथा दोपहर के भोजन का भी प्रस्ताव रखा।

निश्चित समय पर मेरे ससुर चौ. मान सिंह, मेरे पिताजी चौ. गंगा सिंह और मैं मुख्यमन्त्री निवास पर पहुंचे। वहां उन्होंने हमारी सम्मानजनक आवभगत की तथा हमें भोजन करवाया। भोजन करते हुए मेरे ससुर ने मुख्यमन्त्री से मेरा परिचय अपने दामाद के रूप में करवाते हुए मुझे सीधे ही डी.एस.पी. के पद पर भर्ती करने की सिफारिश कर डाली। उन दिनों भर्तियां ऑन द स्पॉट हो जाया करती थी। प्रत्येक बड़े अधिकारी को अपने नीचे भर्तियां करने के अधिकार प्राप्त थे। वैसे भी वो शुरूआती दौर था। उस जमाने के लोगों को पता ही होगा कि एक बार कच्ची भर्ती करने के बाद उनको पक्का कर दिया जाता था। मुख्यमंत्री साहब ने कहा-कोई बात नहीं, आप सोमवार को सुबह दफ्तर आ जाइए। मैं सीधे ही आई.जी. साहब को बुलवाकर इन्हें तुरंत भर्ती करवा दूंगा। परन्तु मित्रो! जैसा कि मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूं कि उस समय मेरे सिर पर एक तो कम्यूनिस्ट विचारधारा का भूत सवार था और दूसरा मेरे ताऊ जी के लड़के प्रीतम की बात का कि वकील कि बड़ी इज्जत होती है। इसलिए मैं आगे पढ़कर वकालत करना चाहता था। अतः सोमवार को मुख्यमन्त्री साहब के दरबार में मैं गया ही नहीं। इस प्रकार घरवालों की समझ में ये बात आ गई कि ये छोकरा नौकरी तो करेगा नहीं।

मित्रो! राजनीतिक सफर की शुरूआत अचानक खेल-खेल में और शौकिया तौर Partial business के रूप में हुई । वकालत 1957 में शुरू हो गई थी। लोगों से मिलना-जुलाना होने लगा तो परिचय और पहचान बढ़ने लगी। अचानक बैठे बिठाए 1959 में मैंने सैंट्रल कॉऑपरेटिव बैंक संगरूर डायरेक्टर के लिए पर्चा भरा और 1959-60 में ही मैं जीन्द लैण्ड डिवलपमैण्ट बैंक का भी डायरेक्टर रहा। इसी दौरान मैंने नरवाना में सैन्ट्रल और लैण्ड डवैलपमेन्ट बैंक की शाखाएं खुलवाई। यानि बैठे-बिठाए ही एक नई राह ने मुझे अपने रास्ते पर खींच लिया।

1961 में मैंने गांव की पंचायत के लिए पंच का चुनाव भी लड़ा था। यद्यपि यह चुनाव लड़ने की भी मेरी कोई मंशा नहीं थी। परन्तु आप सब जानते है कि कई बार संसद की लड़ाई से ज्यादा अहम हो जाती है, परिवार और समाज की लड़ाई। 1962 में ही मैं पंचायत समिति कलायत का चेयरमैन बना और 1964 तक इस पद पर बना रहा। 1964 में दोबारा फिर मैं कलायत पंचायत समिति का चेयरमैन बना परन्तु 1967 में विधानसभा चुनाव आ जाने के कारण इस पद से इस्तीफा देना पड़ा क्योंकि मैं पहली बार विधायक 1967 के चुनावों में ही बना और वो भी निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर। मैंने चेयरमैन पद से इस्तीफा दिया और जुलानी खेड़ा के सम्मखस्वरूप नम्बरदार को इस पद पर चेयरमैन बनवाया। जुलानीखेड़ा को शायद सुस्ताखेड़ा के रूप में भी जाना जाता है। मित्रो! मेरी पहली बार विधायक बनने की दास्तान भी बड़ी रोचक है। मैं तब

बड़े जोर-शोर से वकालत कर रहा था और समाज में मेरा व्यवहार भी सबके साथ मधुर और मिलनसार था।

1 नवंबर 1966 को हरियाणा की स्थापना हुई तथा 1967 में हरियाणा मन्त्रिमण्डल के पहले चुनावों की घोषणा हो गई। सब खुश थे, मैं भी उनमेंसे एक था अपनी सरकार बनेगी, अपने लोग आएंगे तथा विकास होगा। कोर्ट परिसर में खूब बातें होती और बड़ी बहस करते थे हम लोग कि अलग सरकार का ये फायदा होगा अलग सरकार का वो फायदा होगा। जब चुनाव के पर्चे भरने का दिन नजदीक आया तो अनाज मण्डी नरवाना तथा नरवाना क्षेत्र के गांवों के कुछ मौजिज और प्रतिष्ठित लोग इकट्ठे होकर मेरे पास आए तथा कहने लगे कि भाई छोरे इबकै वोटां मैं तू खड़ा होज्या। मैंने कहा-जी क्या बात। क्या हो गया? उन्होंने कहा कि कांग्रेस का टिकेट मिलेगा कलीराम मोर को और हम इस बार कलीराम का विरोध करेंगे। हम चाहते है कि तू निर्दलीय खड़ा हो ज्या अर हम तनै पक्का जितवां द्यांगे। मैंने उनसे नही पूछा कि वे क्यूं कली राम का विरोध और मेरा समर्थन करना चाहते है क्यूकि पता नही क्यूं मुझे ऐसा आभास हुआ मानो एक नया सवेरा, नया उजाला, नई प्रभात मेरे जीवन में आने वाली है। मैंने उन लोगों से कहा कि मैं चुनाव तो लड़ लूंगा, लेकिन मुझे मेरे पिता जी की आज्ञा दिलवानी पड़ेगी। वे लोग फौरन मेरे गांव गए तथा एक कार में मेरे पिता जी को लेकर आ गए। वे मेरे पिता जी को मेरे आर्य उपनगर वाले निवास पर लेकर आए तथा उनकी उपस्थिति मेंएक बार फिर

फैसला हुआ कि मुझे चुनाव लड़ना चाहिए। मेरे पिता जी ने मुझे अनुमति प्रदान कर दी। हमने अपना प्रचार कार्य दनौदा गांव के चबूतरे से प्रारम्भ किया। वहां प्रसाद बांटकर हमने अपने चुनावी प्रचार कार्य का श्री गणेश किया।

मैं, मेरे मित्रा और सभी मौजिज व्यक्ति बड़े जोर-शोर से चुनाव-प्रचार में लगे थे कि अचानक एक स्थिति उत्पन्न हुई। जैसे ही नाम वापिस लेने का दिन आया तो अचानक मेरे पिता जी गांव से नरवाना आए तथा मुझे चुनाव कार्यालय के एक कमरे में ले जाकर अंदर से कुण्डी लगा ली। फिर वे बोले देख भाई छोरे! ये लोग बना रहे है हमें बेवकूफ। ये हमें कोई वोट-वोट नही देने वाले। मैं असमंजस में था करूं तो क्या करूं। एक तरफ पिता जी की आज्ञा तो दूसरी तरफ समाज का विश्वास। मैंने फौरन कुण्डी खोली, पिता जी को साथ लिया तथा नीचे खड़ी कार तक लेकर आया। मैंने ड्राईवर से कहा कि पिता जी को गांव में छोड़कर आओ। तब मैंने पिता जी से कहा कि अब आप शहर में चुनाव के बाद ही आना। क्योंकि मैं चुनाव लड़ूंगा।

मित्रो! मेरे पिता जी एक सरल किसान थे। उन्हे राजनैतिक बारीकियों की जानकारी नही थी। राजनैतिक पृष्ठभूमि तो मेरी भी नही थी। परन्तु स्थानीय चुनावों पर मेरी अच्छी पकड़ हो चुकी थी। उस वक्त तीन पंचायत समितियां थी जिन पर मेरी मजबूत पैठ थी। नरवाना, उचाना और कलायत पंचायत समिति। तीनों पर मैं और मेरे साथी पीठासीन थे। कलायत से मैं स्वंय, नरवाना से

जगदीश राय तथा उचाना से हमने बीरेन्द्र सिंह की मदद की थी। यानि की मैं पूरा आश्वस्त था कि मैं चुनाव को पार निकाल ले जाऊंगा। इसकी वजह मेरा अनुभव और लोगों का विश्वास ही था। मैंने और मेरे साथियों ने कंधे से कंधा मिलाकर काम किया तथा उन्होंने मुझे सचमुच ही विजेता बना दिया। मैंने कलीराम मोर को 1500 मतों से परास्त कर दिया।

उस समय पं. भगवतदयाल शर्मा मुख्यमंत्री बने थे, बाद में उनकी सरकार टूट गई। 1967 के चुनाव में 14 निर्दलीय विधायक विधानसभा में पहुंचे थे और उनमें से मैं भी एक था। हम सबने स्वतंत्र रूप से अपनी अलग पार्टी का गठन कर लिया था जिसका नाम हमने Independent Progressive Party रखा। ये अपने आपमें एक विचित्र इत्तिफाक था कि पं. भगवतदयाल शर्मा कि सरकार मात्र तेरह दिन बाद ही टूट गई थी।

उस समय चुनाव आयोग और राजनीतिक नियमावली आज के जितनी सटीक एंव सशक्त नहीं थी। केवल लठबल और दलबल का राज था। जिसके बाड़े में जितने विधायक होते फाटक का वही मालिक। आज व्यवस्था पारदर्शी है, पार्टी बदलने के और पार्टी बनाने के नियम, कायदेकानून है और सबसे अच्छी बात है कि चुनाव आयोग की स्थिति तकनीकी रूप से मजबूत हुई है।

खैर! मैंने उन सभी 14 विधयकों की अगुवाई की जो निर्दलीय थे। दिल्ली में और उनके घरों में कई मैराथन मीटिंगें की तथा सबको विश्वास में लिया कि यदि एकजुट होकर इकट्ठे रहेंगे

तो मैं सबको वजीर बनवा दूंगा। और यह भी इत्तिफाक की बात है कि चौ. राव बीरेन्द्र की सरकार में चौदह के चौदह निर्दलीय विधायक मंत्री बन गए। मुझे पंचायत एवं विकास विभाग के राज्यमंत्री का पद देकर प्रताप सिंह दौलता बेरी के साथ संबद्ध किया। यह 1967 की बात है और इसी के साथ-साथ नहरी एवं विद्युत विभाग का राज्यमंत्री पद भी मुझे प्रदान किया गया तथा मनीराम गोदारा के साथ संबद्ध किया गया। 1967 में ही चौ. राव बीरेन्द्र सिंह का सरकार बनने के दो माह पश्चात ही चौ. देवीलाल के साथ विवाद हो गया तथा राव साहब ने मुझे को-ऑपरेटिव विभाग का स्वतंत्र प्रभार प्रदान कर फुल वजीर बना दिया।

मैं चौ. देवीलाल का मान-सम्मान करता था और चौ. साहब भी मेरे प्रति बहुत आदर रखते थे। वे मुझसे शुरु से ही एक कुशल राजनीतिक के रूप में प्रभावित थे। उन्होंने मुझे अपने साथ काम करने का आग्रह भी कई बार किया था। मेरे एम.एल.ए. हॉस्टल वाले कार्यालय पर भी उन्होंने मुझसे कई वार्ताएं की। मेरे रिश्तेदारों के माध्यम से भी कई बार दबाव डलवाया। परन्तु मैं शुरु से ही कांग्रेस टाईप की विचारधारा का था। क्योंकि मैं कॉमरेड था और भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी का जन्म कांग्रेस से ही माना जा सकता है। खैर! उनका रंग मुझ पर नहीं चढ़ा और मेरा जादू उन पर नहीं चला।

राव बीरेन्द्र सिंह की वह सरकार संयुक्त विधानमण्डल पार्टी की सरकार थी जिसमें महंत श्री सिरियोनाथ, चौ. मनफूल

सिंह झज्जर, प्रताप सिंह ठाकरान गुड़गांव तथा चाचा धनसिंह पलवल जैसे कई अन्य मंत्रीगण थे। कांग्रेस उस समय दिल्ली में भी सत्ता से बाहर थी तथा हरियाणा में भी सत्ता से बाहर थी। मित्रो! 1972 में चौ. बंसीलाल जी मेरे घर पर नरवाना आए तथा कांग्रेस पार्टी में शामिल होने के लिए प्रस्ताव रखा। मैंने उनसे विचार करने के लिए समय मांगा तथा अपने मित्रा, रिश्तेदारों और मेरे कार्यकर्ताओं की मिटिंग बुलाकर उन्हें बंसीलाल जी के अनुरोध के बारे में बतलाया। सबने बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की तथा एकमत से पार्टी सदस्यता का समर्थन किया।

मित्रो! मैंने उनके सामने शर्त रखी कि एक बार पार्टी में शामिल होने के बाद मै दोबारा पार्टी नही बदलूंगा। चाहे बात माने या ना मानें। चाहे काम हों या ना हों। चाहे टिकेट मिले या ना मिले। सबने मेरे कथन का सहर्ष स्वागत किया।

मित्रो! 1972 में मैंने कांग्रेस पार्टी की विधिवत सदस्यता ग्रहण की। तबसे लेकर आज तक हरियाणा के कांग्रेसी नेताओं में मै एकमात्रा ऐसा नेता हूं जिसने पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने के पश्चात कभी ना तो पार्टी को बदला और ना कभी पार्टी छोड़ने की धौंस या धमकी दी।

मित्रो! कांग्रेस की नीतियां मार्क्सवादी है जो आम गरीब, किसान के हितों का ख्याल रखने वाली है इसलिए मुझे कांग्रेस का मंच अच्छा लगता है। मित्रो! 1962 से लेकर 1972 तक दस वर्ष का कार्यकाल मेरी स्थानीय एवं सतही राजनीति का कार्यकाल

रहा। इन दस वर्षों में मैं बैंकों और पंचायत समितियों के चुनावों का मंजा हुआ खिलाड़ी हो गया था। ऐसा एक भी चुनाव नहीं था जिसमें मैंने हाथ डाला और सफलता ना पाई हो। इन चुनावों में मेरी पैठ का अंदाजा आप इसी तथ्य से लगा सकते हैं कि इन दस वर्षों में दो बार मैं स्वंय समिति चेयरमैन रहा, को-ऑपरेटिव बैंक एंव लैण्ड डिवैल्पमैंट बैंकों का डायरेक्टर रहा। बाद के चुनावों में मैंने मेरे तीन भाईयों बलवंत सिंह, तारीफ सिंह और दिलबाग सिंह को, मेरे मित्रा लक्ष्मण देव आर्य और ओमप्रकाश कान्हा खेड़ा को भी कॉपरेटिव बैंकों का डायरेक्टर बनवाया।

1967 में राव बीरेन्द्र सिंह की सरकार बामुश्किल साल भर भी नहीं चल पाई थी कि फिर सरकार टूट गई। राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। इन्हीं राजनैतिक अस्थिरताओं के बीच 1968 में चुनाव हुए। एक बार फिर मैं निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर उम्मीदवार था। कांग्रेस पार्टी की टिकेट पर चौ. नेकीराम डूमरखा ने चुनाव लड़ा। इस चुनाव में चौ. नेकीराम चुनाव जीत गए थे। मैं हार गया था। इस हार पर मैं बड़ा प्रसन्न था। बहुत हल्का-फुल्का महसूस कर रहा था। इस घटना का जिक्र मैं पहले के अध्याय वकालत एवं व्यवसाय में कर चुका हूं।

इस सरकार के मुख्यमंत्री चौ. बंसीलाल बने। मित्रो! इस बीच मैंने जमकर वकालत की और पैसे कमाए। इसी दौरान मैंने नरवाना वाला मकान भी बनवा लिया था। तब आए 1972 के चुनाव। इनमें मैंने भागीदारी नहीं की। इस बार निर्दलीय प्रत्याशी

के तौर पर लाला गौरी शंकर ने चुनाव लड़ा तथा कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी के तौर पर चौ. बीरेन्द्र सिंह डूमरखा उम्मीदवार थे। मैंने और मेरे साथियों ने बीरेन्द्र सिंह की मदद की, परन्तु वे चुनाव हार गए और लाला गौरी शंकर विजेता बने। मित्रो! तब के उस दौर तक नरवाना के लोग सामाजिक तौर पर ज्यादा संगठित और मेलजोल रखने वाले कहे जा सकते हैं चुनाव परिणाम से पहले ही समाज का रुख स्पष्ट कर देता था कि कौन जीतने वाला है और कौन हारने वाला है? आज स्थिति बदल गई है? लोग वोट और स्पोर्ट दोनों में ही गोपनीयता बरतने लगे हैं। तब जनता मुखर ज्यादा थी। अगर वोट नही देने होते तो बुजुर्ग लोग प्रत्याशी के मुंह पर ही कह देते थे " देख भाई छोरे!
इबकै वोट तनै नही द्यांगे इबकै तो हामनै उसकी हां भर ली।"

मित्रो! इसी बीच (1972 से 1977 तक) नरवाना और उचाना दो अलग-अलग हल्के बन चुके थे। मैंने कांग्रेस पार्टी ज्वाइन कर ली थी। तब आया 1977 का चुनाव। इसमें कांग्रेस पार्टी ने मुझे नरवाना से तथा बीरेन्द्र सिंह को उचाना से टिकेट प्रदान किया। हम दोनों ही अपने-अपने हल्कों से जीतकर विधानसभा पहुंचे। मित्रो! 1977 की हमारी जीत कांग्रेस पार्टी की आश्चर्यजनक जीत थी। इस समय पूरे हरियाणा मे कांग्रेस पार्टी के कुल तीन उम्मीदवार ही अपनी जीत दर्ज करवा पाए थे। एक तो मै दूसरे बीरेन्द्र सिंह और तीसरे कन्हैया लाल पोषवाल। एक चौथे उम्मीदवार के तौर पर बंसीलाल के सुपुत्र स्व. सुरेन्द्र सिंह निर्दलीय

प्रत्याशी के तौर पर विजयी हुए थे। श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने हमारा बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया था तथा हमारी जीत से वे आश्चर्यचकित थी थी। मित्रो! इंदिरा जी ने मुझे हम तीनों का मुखिया बनाते हुए एसेम्बलि में पार्टी का लीडर बनाया था। अचानक घटनाक्रम हुआ और 1978 में कांग्रेस पार्टी दो भागों में बंट गई। एक पुरानी कांग्रेस तथा एक इंदिरा कांग्रेस पुरानी कांग्रेस के प्रधान निजलिंगप्पा थे तथा नई कांग्रेस की मुखिया स्वयं इंदिरा जी थी। पुरानी कांग्रेस के चण्डीगढ़ कार्यालय पर लाला बनारसी दास गुप्ता और उसके साथियों का कब्जा था। फलतः नई कांग्रेस के पास ना कोई अपना दफ्तर था और ना ही कोई भवन। श्रीमती इंदिरा जी के अनुरोध पर मैंने अपने एम.एल.ए. फ्लैट में इन्दिरा कांग्रेस का दफ्तर स्थापित किया जिसका वर्णन मैं पिछले अध्याय में कर चुका हूं।

मित्रो! तब पुरानी कांग्रेस में शामिल करने के लिए लाला बनारसी दास तथा कांग्रेस के अन्य नेता एम.एल.ए. फ्लैट में मेरे पास आए थे तथा सीधे-सीधे कहा कि चलो और चलकर दफ्तर संभालो। हम आपको हरियाणा का प्रधान बनाएंगे। मैं अपने साथियों के सामने रखी हुई अपनी शर्त पर अडिग रहा।

1967 में जब चौ. देवीलाल राव बीरेन्द्र सिंह की सरकार को तोड़ने का प्रयास में लगे थे तब वे भी पिता जी चौ. गंगा सिंह और मेरे रिश्तेदारों को लेकर मेरे पास चण्डीगढ़ पहुंचे थे। उन्होंने भी मेरे सामने अपने साथ काम करने का प्रस्ताव रखा। उन्ही दिनों

चौ. दल सिहं ढुल जो पं. भगवत दयाल शर्मा की सरकार में बिजली मंत्री थे, उन्होंने भी मेरे सामने कांग्रेस पार्टी में शामिल होने का प्रस्ताव मेरे नखराना वाले निवास पर आकर रखा था। क्योंकि तब तक मैं निर्दलीय प्रत्याशी था। मित्रो! तब भी मैंने अपने विवेक से निर्णय लेते हुए उन्हें बड़ी विनम्रता के साथ ना कह दी।

मित्रो! 1977 के चुनावों में जनता पार्टी बहुमत के साथ विधानसभा में पहुंची परन्तु भजनलाल जी कांग्रेस पार्टी में आस्था दिखलाते हुए सन 1980 में अपने 40 साथियों सहित कांग्रेस पार्टी में कूद गए। यद्यपि मैंने इस बात का विरोध किया था और उसी वक्त यह महसूस भी कर लिया था कि इस प्रकार दल-बदल से एक तो अनैतिक राजनीति की शुरूआत हो जाएगी दूसरे प्रान्त का विकास भी नही हो पाएगा। क्योंकि राजनीतिक अस्थिरताएं ही इतनी हो जाएंगी कि नेता लोग और सरकारी मशीनरी निश्चिंत होकर काम नही कर पाएगी। परन्तु कांग्रेस के आलाकमान अधिकारी कांग्रेस को शायद किसी भी सूरत में सत्ता पर काबिज करने के पक्ष में थे। इसलिए वे साम-दाम, दण्ड-भेद सभी नीतियों पर एक साथ काम करते हुए कांग्रेस को सत्तासीन करना चाहते थे और उन्होंने उसे करके भी दिखला दिया। इसका माध्यम उन्होंने भजनलाल को बनाया।

चौ भजनलाल के प्रयासों के परिणामस्वरूप कांग्रेस सत्तासीन हुई जिसके मुख्यमन्त्री स्वयं भजनलाल जी बने। चौ भजनलाल के मन्त्रीमण्डल में शामिल होने की मेरी व्यक्तिगत कोई मंशा नही थी

क्योंकि उस समय मैं राजनीतिक अस्थिरताओं को स्पष्ट रूप से महसूस कर रहा था। परन्तु हाईकमान की नजर 1982 के चुनावों पर थी। अपने पुराने और विश्वसनीय साथियों को भी अपने साथ बनाए रखना था। फलतः हाईकमान ने 1981 में मुझे कैबिनेट मन्त्री बनवा दिया। मेरे अचानक कैबिनेट मंत्री बनने का वाकया भी बड़ा दिलचस्प है। मित्रो! मेरे पास माननीय इंदिरा जी के ओ. एस.डी. मि. धवन का फोन आया कि माननीय इंदिरा जी मुझसे मिलना चाहती हैं जब मैं गया तो माननीय इंदिरा जी ने मुझसे कहा इस राज में कांग्रेस के अपने मंत्री नहीं है क्योंकि सारे मंत्री भजनलाल के है और गैर कांग्रेसी हैं अपने कार्यकर्ता किसके पास जाएंगे। मैंने कहा कि मैं इन लोगों को कांग्रेस में शामिल करने के लिखाफ हूं तथा भजनलाल इस बात को जानते हैं मैं नहीं चाहता कि भजनलाल के साथ-साथ मेरे कार्यकर्ता भी मुझसे नाराज हो जाएं। माननीय इंदिरा जी खामोश रही। उन्होंने कुछ नहीं कहा । मैं वापिस चला आया। एक महीने बाद मुझे फिर बुलाया गया। इस बार धवन साहब बोले - देखो! मैडम आपको मंत्री बनाने का निर्णय ले चुकी हैं इस बार मना नहीं करना, वरना वे नाराज हो जाएंगी। मैंने उनके आदेश को मान लिया और वापिस चला आया।

माननीय इन्दिरा जी ने भजनलाल को पहले ही निर्देश दे रखे थे कि सुरजेवाला को कैबिनेट में शामिल करना है। इसलिए भजनलाल जी ने मंत्री पद की शपथ सूचना देने और मुझे

तलाश करने के लिए डी.सी. जीन्द को नरवाना भेजा। डी.सी. साहब जैसे ही दोपहर को नरवाना पहुंचे तो मैं उनसे पहले ही कार लेकर जीन्द में मेरे दोस्त सज्जन कुमार के घर चला गया था। सज्जन कुमार मेरा मित्र था और सलाहकार भी रहा। उस समय वह नहरी विभाग में क्लर्क था। बाद में वह टैक्सेशन इन्सपैक्टर बन गया था।.... तो डी.सी. साहब मुझे ढूंढते-ढांढते वहीं सज्जन सिंह के घर पहुंच गए। उन्होंने मुझे मुख्यमंत्री भजनलाल का संदेश दिया कि मुख्यमंत्री साहब ने अचानक चण्डीगढ़ बुलाया है। मैं सायं तक चण्डीगढ़ जा पहुंचा। भजनलाल जी ने मुझसे कहा-कल सुबह दस बजे मंत्रीमंडल की शपथ है। मैं आपको सीनियर मिनिस्टर बना रहा हूं और बहुत अच्छा पोर्टफोलियो आपको दे रहा हूं। मैं चुपचाप सुनता रहा, क्योंकि मुझे तो पहले से ही सब पता था। वे फिर बोले-आप सुबह मेरे पास आ जाना। हम यहां से सुबह इकट्ठे चल पड़ेंगे या फिर आप सीधे ही राजभवन पहुंच जाना। जैसा आपको उचित लगे वैसा कर लेना।

मित्रो! मैं सीधे ही राजभवन पहुंच गया तथा मन्त्रीपद की शपथ ग्रहण करते हुए मुझे संसदीय कार्यमंत्री एवं कृषि मंत्री के पद का दायित्व प्रदान किया गया। दिन था 15 जनवरी 1981। मित्रो! तब तक मैंने अपने घरवालों को भी इस बात की सूचना तक नहीं दे रखी थी कि मैं मन्त्रीपद की शपथ लेने जा रहा हूं अगले दिन वापिस आकर मैंने अपने घरवालों और कार्यकर्ताओं को सीधे मन्त्रीपद की बधाई स्वयं आकर दी। 15 जनवरी 1981 से लेकर

1982 के चुनावों तक मैं संसदीय कार्यमंत्री और कृषि मंत्री के पद पद पीठासीन रहा।

मित्रो! हरियाणा का कृषि मंत्री बनते ही मुझे एक और पद अलग से प्राप्त हुआ जो खेती किसानी से जुड़ा था। मुझे हरियाणा कृषक समाज का अध्यक्ष बना दिया गया। तब श्रीमान् बलराम जाखड़ ऑल इण्डिया कृषक समाज के अध्यक्ष थे। 1981 में ही मुझे इस पद का दायित्व प्रदान किया गया इसमें मेरे साथ निर्मल सिहं अम्बाला, तेजेन्द्र पाल सिहं मान करनाल, छत्तरपाल सिहं हिसार, गोर्धनदास बाल्मीकि और उनकी बेटी हमारे साथ कृषक समाज की पदाधिकारी थी। इस बैनर तले भी हमने खूब जोर-शोर से काम किया। इसके बाद आया 1982 का चुनाव इस बार भी मैं कांग्रेस पार्टी की ओर से नरवाना क्षेत्र का प्रत्याशी था। लाला गौरी शंकर इस बार निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर खड़े हो गए थे। मित्रो! भजनलाल की अनिच्छा के बावजूद श्रीमती इंदिरा जी तब चुनाव में मेरी मदद करने के लिये नरवाना आई थी। भजनलाल जी ने डी. सी. एवं अन्य अफसरान से ये लिखवाकर भिजवा दिया था कि नरवाना में हेलिकॉप्टर उतर नहीं सकेगा। लेकिन इन्दिरा जी ने कहा कि मैं नरवाना जरूर जाऊंगी। मैंने रात को ही राजीव गांधी जी से बात की और बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल चाहते हैं कि मैं हार जाऊं इसलिए उन्होंने लाला गौरीशंकर का पर्चा मेरे विरूद्ध भरवाया है। तब राजीव जी ने मुझे आश्वस्त किया कि आप चिंता न करें, माननीय इंदिरा जी दिल्ली से कार द्वारा आई और रैली को

सम्बोधित किया। इन्दिरा जी ने रैली सम्बोधन से लेकर जनता को मिलते समय तक मुझे अपने बराबर खड़ा किये रखा। रैली में बहुत सी औरतें आई हुई थी। इंदिरा जी मंच से उतर कर उनसे मिलकर भी गई ।

मित्रो! माननीय राजीव जी भी तब ला. गौरीशंकर का पर्चा वापिस करवाने के लिए आए थे। तब राजीव जी महासचिव होते थे ए.आइ.सी.सी. के। राजीव गांधी जी ने आते ही मुख्यमन्त्री भजनलाल, हरपाल सिहं और बी.डी. गुप्ता को बुलाया। उस समय ला. गौरीशंकर और बी.डी. गुप्ता व्यापार के सांझीदार थे। स्व. राजीव जी ने पीडब्ल्यू डी रेस्ट हाऊस जीन्द में हमारी मीटिंग ली और ला. गौरी शंकर का पर्चा वापिस करवाने के स्पष्ट निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने हरपाल सिहं और बी.डी. गुप्ता को ला. गौरीशंकर को ढूंढकर लाने की ड्यूटी भी लगाई। परन्तु दोनों कुछ देर इधर-उधर घूम-घामकर वापिस आ गए और जवाब दिया कि-साहब मिला नही।

मित्रो! तब मैंने राजीव जी को आश्वस्त किया कि आप चिन्ता ना करें, मै अच्छे मतों से जीत हासिल करूंगा। और उस चुनाव में मै साढ़े छः हजार मतों के अन्तर से विजेता बना। मित्रो! तब मुझे बिजली एवं सिंचाई विभाग का महत्वपूर्ण पद प्रदान किया गया तथा उस सरकार में मै दूसरे नम्बर का मुख्यमन्त्री था।

मित्रो! माननीय इंदिरा गांधी जी एवं माननीय राजीव गांधी जी की इच्छा थी कि मै मुख्यमन्त्री बनूं और इसकी निर्मिति

उनके हाथों हो। परन्तु शायद विधाता की यह इच्छा नहीं रही होगी। मित्रो! राजीव गांधी जी मेरी कार्यशैली से बड़े खुश थे। माननीय इन्दिरा जी की मृत्यु के पश्चात जब मैम्बर पार्लियामैंट के चुनाव आए तब भजनलाल जी ने मुझे लोकसभा में भिजवाने की इच्छा से मेरा, बीरेन्द्र सिंह और हरपाल सिंह का नाम एम.पी. के चुनाव लड़ने के लिए प्रस्तावित किया था। परन्तु मेरे कुछ राजनीतिक सालाहकार और दोस्तों ने मुझे ऊपर चुनाव न लड़कर हरियाणा की राजनीति में ही जमे रहने तथा चुनाव न लड़ने की इच्छा जाहिर की। तब बीरेन्द्र सिंह हिसार से एम.पी. बने थे। मित्रो इस घटना को राजनैतिक दृष्टिकोण से मैं एक चूक मानता हूं जिससे मेरा राजनैतिक सफर प्रभावित हुआ। उस समय मुझे एम.पी. का चुनाव लड़ लेना चाहिए था। वर्ष 1987 के चुनावों से दो माह पूर्व स्वयं राजीव गांधी जी अचानक बिना किसी पूर्व सूचना के मेरे विधानसभा क्षेत्र में आए थे। वे अचानक रोहतक से स्वयं अपनी जोंगा जीप चलाकर नरवाना के कई गांवों का दौरा करके गए थे। उस समय वे भारत के प्रधानमन्त्री थे। उन्होंने अपनी जोंगा कार को सड़क रास्ते से नरवाना भिजवा दिया था। तब उन्होंने मुझे अपने साथ हैलिकॉप्टर में लिया और रोहतक से सीधे नरवाना आकर उतरे। मैंने रास्ते में उनसे कहा कि आपके इस प्रकार अचानक मेरे विधानसभा क्षेत्र में चले आने की वजह से मुख्यमंत्री जी मुझसे नाराज हो जाएंगे। शायद वे समझे कि सुरजेवाला अगले मुख्यमन्त्री के लिए जनता को संकेत देना चाहता है। क्योंकि बंसीलाल जी

थोड़े जल्दी नाराज हो जाने वाले व्यक्तित्व के आदमी थे और मैं खामखाह कोई गलतफहमी पैदा नहीं होने देना चाहता था। और मित्रो! ये मेरी आदत भी रही है कि मैं सबके साथ सीधे और साफ-सुथरे संबंध रखता था। बिना वजह ना तो किसी की चापलूसी करता था और ना ही किसी के साथ तल्खी रखता था। सबके साथ राम-राम सबके साथ काम-से-काम। और शायद यही वजह है कि अपने राजनीतिक जीवन में मैंने कभी किसी के साथ खटास पैदा नहीं होने दी। तब राजीव जी हेलिकॉप्टर से उतरकर खुद ड्राईवर सीट पर बैठे। मुझे बराबर की सीट पर बिठाया और मुझसे पूछ-पूछ कर चलने लगे और हम हिसार की सड़क पर निकल पड़े जहां राजीव जी ने अचानक भीखेवाला गांव के लिंक रोड़ पर गाड़ी डाल दी वहां राजीव जी ने बड़े आराम से आम जन साधारण के जीवन को देखा। उनके घरों को, बीमारों को बड़ी तसल्ली से देखा। वहां हरिजन घरों में उन्होंने दूध भी पिया। लोगों को इस बात का यकीन ही नहीं हो रहा था कि भारत का प्रधानमन्त्री उनके गांव में इतने साधारण तरीके से और वो भी बिना बुलाए आ गया है। वास्तव में राजीव जी ने उन पुरानी लोककथाओं को वास्तविक चरितार्थ कर दिया था जिनमें राजा चुपके से या भेष बदलकर जनता के बीच में पहुंच जाया करते थे। इस प्रकार भीखेवाला दनौदा आदि गांवों से होते हुए राजीव जी हिसार की तरफ रवाना हो गए थे। वहां पर हैलीकॉप्टर उनकी प्रतीक्षा में तैयार खड़ा था। यहां से वे सीधे दिल्ली के लिए उड़ गए थे। पूरे हरियाणा में इस

बात की चर्चा उड़ चली थी कि राजीव जी बिना बताए सुरजेवाला के गृह क्षेत्र में पहुंच गए। बड़ा अच्छा दोस्ताना व्यवहार था राजीव जी का मेरे प्रति।

मित्रो! 1982 से 1987 के चुनाव तक मैं बिजली सिंचाई मंत्री रहा और फिर 1987 का चुनाव रणदीप के बीमार होने की वजह से बीच में ही छोड़ देना पड़ा। इस घटना का उल्लेख मैं पिछले अध्याय-परिवार में कर चुका हूं।

1987 से 1990 तक चौ. देवीलाल और ओमप्रकाश चौटाला मुख्यमन्त्री रहे। इस दौरान हमने बहुत संघर्ष किया। जलसे, जुलूस, धरने और गिरफ्तारियां। जनसभाएं, पदयात्राएं खूब की हमने सरकार के अत्याचारों के विरोध में। इन सबका सविस्तार वर्णन पिछले अध्याय किसान-संघर्ष में किया जा चुका है।

मित्रो! 1988 में माननीय राजीव जी ने मुझे हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष मनोनीत करते हुए कांग्रेस में फिर से जान फूंकने का आदेश प्रदान किया। मित्रो! इस दौरान मैंने पूरे हरियाणा प्रान्त के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क स्थापित किया तथा उनमें जोश-खरोश पैदा करने के लिए पदयात्राएं की तथा तीन बार बुड़ैल जेल चण्डीगढ़ में हजारों कार्यकर्ताओं साथ गिरफ्तारियां भी दी।

मित्रो! मेरे प्रदेशाध्यक्ष बनने के पश्चात् मैंने अग्रिम, मध्य और पश्च तीन प्रकार की सक्रिय टीमों का गठन किया। अग्रिम पंक्ति में जान लड़ाने वाले और गिरफ्तारियां देने वाले कार्यकर्त्ता

तैयार किये तो मध्य पंक्ति में कर्मचारी, कामगार, दुकानदार और व्यापारी वर्ग को तैयार किया। पश्च पंक्ति में हमने वृ) बुजुर्गों, दलितों, मजदूरों और महिलाओं की भावनाओं को कांग्रेस के साथ जोड़ा। इन सबसे अलग हम किसान-खेत -मजदूर के लिए अलग से कार्य कृषक समाज के मंच के माध्यम से कर रहे थे।

मित्रो! 1987 का चुनाव जब मैंने बीच में छोड़ दिया था तब नखाना से एक प्रत्याशी जीत कर आए थे स्व. चौ. टेकचन्द नैन धरौंदी वाले। वे भी किसान परिवार के सरल प्रवृत्ति वाले आदमी थे। नखाना वाले मकान के हम दीवार के पड़ोसी भी है। बाद में वे कांग्रेस में शामिल भी हुए और मेरे बाद के चुनावों में हमारी उन्होंने मदद भी की। वे भी मेरी तरह सीधी-साफ बात कहने में विश्वास रखने वालों में से एक थे। यही टेकचन्द नैन जी 1991 वाले चुनाव में एक बार फिर मेरे सामने प्रतिद्वंदी के तौर पर खड़े थे। इस चुनाव को त्रिकोणीय बनाते हुए ला. गौरीशंकर जी भी खड़े हो गए थे। जनता के लिए और मेरे लिए रोचक मुकाबला हो गया था। क्योंकि तीनों ही नेता पहले भी नखाना की जनता के सशक्त उम्मीदवार रह चुके थे। बड़ी असमंजसता थी कि जनता किसके सिर पर राज का ताज रखेगी क्योंकि तीनों ही नेता योग्य उम्मीदवार थे। जनता के बीच के और जनता द्वारा जांचे-परखे हुए। अब प्रश्न प्रतिष्ठा का भी हो गया था।

मित्रो! 1991 के चुनावों ने मुझे ये साफ संकेत दे दिया था कि नखाना के लोग अब जागरूक हो गये है। उन्हे अपने विकास

और नेता की परख है। दोनों नेताओं को पटखनी देते हुए जनता ने मुझे अपना प्रतिनिधि चुनते हुए मेरे लिए 1991 की विधानसभा का मार्ग प्रशस्त किया। इस सरकार के मुख्यमन्त्री एक बार फिर चौ. भजनलाल बने और मुझे भी फिर से बिजली पानी मंत्री और संसदीय कार्यमंत्री का पदभार प्रदान किया गया। मित्रो ! 1982, 1986 तथा 1991 तीनों बार की सरकारों में मैं उम्र और तजुर्बे के लिहाज से सबसे वरिष्ठ मंत्री था। मित्रो! 1991 के चुनावों में 1972 के पश्चात 19वर्ष के बाद कांग्रेस पार्टी का स्पष्ट बहुमत आया था।

1991 की सरकार के दौरान ए.आई.सी.सी. के अध्यक्ष नरसिम्हा राव जी थे जो उस समय प्रधानमन्त्री भी थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे मुझे राज्य सभा में भिजवा दें क्योंकि मैं भजनलाल के साथ मंत्री नहीं रहना चाहता। उन्होंने मेरे निवेदन को स्वीकार करते हुए मुझे राज्यसभा का सदस्य मनोनीत कर दिया। वहां 1992 से 1998 तक राज्यसभा का सदस्य रहा जहां मैंने किसानों से जुड़े मुद्दों को राज्य सभा में उठाया।

मित्रो! राज्यसभा का एक बड़ा दिलचस्प वाकया मुझे याद है कि मैंने जब किसानों से संबंधित मुद्दे को संसद में उठाया तो तत्कालीन सभापति जी अचानक बड़े नाराज हो गए तथा मुझे डंपटते हुए बोले-क्या सुरजेवाला साहब! आप सारा दिन किसान-किसान करते रहते हैं। आपको किसानों के सिवाय और कुछ सूझता नहीं। बैठ जाइए आप। सभापति का मान रखते हुए

मैं बैठ गया। पर मुझे बड़ा महसूस हुआ मैं अचानक खड़ा हो गया और सभापति से मुखातिब होकर मैंने कहा-माननीय सभापति महोदय! मैं ये जानना चाहता हूं क्या किसान शब्द अनपार्लियामैन्ट्री है। यह सुनकर सभापति महोदय की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और बगलें झांकने लगे। मेरे इस प्रश्न पर खूब तालियां बजी तथा अन्य सांसदो ने भी मेरा समर्थन किया।

मित्रो! फिर 12 अक्तूबर 1998 को मैंने सोनिया जी को नरवाना बुलवाया जिसका उल्लेख किसान संघर्ष वाले अध्याय में हो चुका है

फिर तो मैंने केवल किसान, मजदूर, खेतिहर मजदूर, गरीबो एवं दलितो के लिए दिन रात काम करने का बीड़ा उठा लिया और उनकी मदद और सहयोग के लिए हर पल तैयार रहता। इसी बीच 2000 के चुनाव आए जिसमें मैंने अपने स्थान पर मेरे पुत्र रणदीप को नरवाना से चुनाव लड़ाया। उस समय मैं राजनीति से निः संगता की कोशिश में था। परन्तु फिर मुझे एहसास हुआ कि बिना राजनैतिक पद के मैं किसान और मजदूरो की धरातलीय और ठोस मदद नही कर पाउंगा। इसलिए मैंने दोबारा फिर माननीय सोनिया जी के सामने चुनाव लड़ने की इच्छा जाहिर की तो उन्होंने मुझे 2005 के चुनावों में कैथल विधान सभा क्षेत्र का टिकेट प्रदान किया। मित्रो! कैथल क्षेत्र का आज कितना विकास हुआ है और सुरजेवाला परिवार का इसमें कितना योगदान है यह सब आज पूरे हरियाणा प्रान्त से छिपा नही है।

मित्रो! वर्ष 2005 में मैडम सोनिया जी ने मेरे किसान संघर्षों कार्यों पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाते हुए मुझे किसान, खेत-मजदूर कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का दायित्व प्रदान किया जिस पर मैं आज तक कार्यरत हूं।

मित्रो! वर्ष 2005 के पश्चात् 2009 के चुनावों में मैंने कैथल के विकास की डोर फिर मेरे पुत्र रणदीप के हाथों में सौंप दी और एक बार फिर मैं स्वास्थ्य लाभ के लिए आराम की स्थिति में आने की सोचने लगा।

करवाए गये कार्य

मित्रो! जैसा कि मैंने पिछले अध्यायों में इस बात का वर्णन किया है कि मेरी पारिवारिक पृष्ठ भूमि किसी राजनैतिक घराने की ना होकर एक सामान्य किसान परिवार की रही है। इसलिए मेरा रुझान, मेरी सोच और मेरी सारी कार्य योजनाएं आम-आदमी और गांव-समाज से जुड़ी होती है। हरियाणा की अपनी पहली विध ानसभा ह्द1967ॠ में ही मैंने अपनी उपस्थिति दर्ज करवा दी थी। यह हरियाणा प्रान्त के विकास का दौर था। इत्तिफाक से माननीय इन्दिरा जी भी हरियाणा के विकास की पक्षधर थी। इसलिए प्रदेश के सामने अपने विकास की दिशा में राजनैतिक एवं प्रशासनिक बाधाएं कुछ ज्यादा नही आई। 1967 से लेकर बाद के वर्षों में हरियाणा के विकास के लिए बिजली एवं सिंचाई क्षेत्रा की जितनी भी बड़ी एवं छोटी बुनियादी योजनाएं शुरू की गई उन सबसे मेरा जुड़ाव रहा। इसका कारण यह था कि मैं इन दोनों विभागों का दो बार फुल बजीर रहा।

मित्रो! मैंने पूरी कोशिश की थी कि हरियाणा के सभी गांवों में जल्द से जल्द बिजली और पानी की पंहुच सुनिश्चित हो जाए। इसलिए मैंने पूरे हरियाणा में ही बिजली और पानी की अनेकों परियोजनाओं का शिलान्यास करवाया।

अपने कार्यकाल में मैंने बादशाहपुर जिला गुड़गांव में **440** K.V.A. का, कैथल, नरवाना और करनाल में **220- 220** K.V.A. के बिजली घर बनवाए। दनौदा,धमतान,गढ़ी,धनौरी,कलायत और

उचाना में 33 के.वी.ए. के सबस्टेशन बनवाए। गढ़ी और नरवाना में 66 के.वी.ए. के. स्टेशन बनवाए।

मित्रो! यद्यपि मेरा कार्यक्षेत्र पूरा हरियाणा रहा परन्तु फिर भी नरवाना मेरा अपना गृहक्षेत्र था मेरे लिए कर्मक्षेत्र, धर्मक्षेत्र एवं जन्म क्षेत्र था। अतः जाहिर सी बात है कि यहां मैंने कुछ अधिक ध्यान दिया।

सबसे पहले मैंने अपने पहले विधायक काल में चौ. राव बीरेन्द्र सिंह को नरवाना बुलवाया तथा सर्वप्रथम कॉलेज की बिल्डिंग का पत्थर रखवाया जिसका नामकरण पं. जवाहर लाल नेहरू जी की धर्मपत्नी कमला जी के नाम पर किया गया। नरवाना की मेनवाटर सप्लाई के लिए पत्थर रखवाया तथा पुराने बस अड्डे से लेकर नए बस अड्डे तक की सड़क का निर्माण करवाया। इन तीनों महत्वपूर्ण कार्यों की आधारशिला मैंने अपने पहले ही कार्यकाल में रखवा दी थी।

1977 में जब दूसरी बार विधायक बना तो मैंने सबसे पहला खास काम नरवाना के प्राईवेट कॉलेज को सरकार के अधीन, अन्डरटेक करवाने का कार्य किया। दरअसल तब मुख्यमंत्री चौ. देवीलाल ने सिरसा और कालांवाली के कॉलेजों को टेकओवर करवा दिया था। मैंने विधानसभा में इस मुद्दे को इतने जोर से उछाला कि वे बोले-भाई! नरवाना वाले कॉलेज को भी साथ ही अन्डरटेक कर देना। इस प्रकार नरवाना का प्राईवेट कॉलेज सरकारी कॉलेज बन गया। जिसका नाम कमला मैमोरियल राजकीय महाविद्यालय है। बाद में यहां मैंनें राजनीति विषय की एम.ए. कक्षाएं शुरू करवाई ताकि नरवाना क्षेत्र के बच्चों का राजनीति में ज्ञान और रुझान हो सके। इसके साथ ही मैंने साईंस की पढ़ाई के

महत्व को समझते हुए यहां साईंस फैकल्टी को शुरू करवाया। बाद में मेरे पुत्र रणदीप ने यहां बड़ा भव्य साईंस और कॉमर्स ब्लॉक बनवाया तथा कई व्यावसायिक कोर्स बी.सी.ए., बी.टी.एम. आदि शुरू करवाए। इस कॉलेज के आरंभिक निर्माण अभियान में हमारे साथ लाला धनराज नरवाना वाले, लाला भलेराम अमरगढ़ वाले तथा लाला राम जी लट्टू धरौंदी वाले का बड़ा सक्रिय योगदान रहा। मित्रो! नरवाना के क्षेत्र को बांगर का इलाका कहते थे। सारा क्षेत्र शुष्क था। सिंचाई के लिए पानी की एक बूंद भी पूरे रकबे में नहीं लगती थी। पानी की कमी के कारण पैदावार भी बहुत कम थी। तरई के एरिया वाले लोग तो यहां स्थिता करने से भी कतराते थे। गांवों में पीने के पानी के मुख्य स्रोत एकाध कुंआ या कुंई ही होती थी। लेकिन विडम्बना की बात यह थी कि इस इलाके के बीचों बीच पानी से लबालब भरी भाखड़ा नहर निकलती थी, किंतु कहीं भी कृषि सिंचाई के लिए एक बूंद पानी की निकालने की व्यवस्था प्रशासन ने उसमें नहीं रख छोड़ी थी। लोग अधिकारियों से मिलते थे तो वे स्पष्ट जवाब देते कि यह नहर नरवाना के लिए नहीं, बरवाला के लिए, हिसार के लिए बनी है। मैंने पहली बार सरकार के इस प्रस्ताव में संशोधन करवाकर नरवाना के सारे रजवाहों को, बरवाला लिंक से जुड़वा दिया। धमतान माईनर, मोहलगढ़ माईनर, कालवन माईनर आदि जितने भी रजवाहे उस नहर को क्रॉस करते थे तथा उसमें से पानी नहीं लेते थे, मैंने उन सबका लिंक बरवाला लिंक नहर में से करवा दिया।

1981 में जब मैं तीसरी बार विधायक बना तो मैंने मुख्यमंत्री भजनलाल जी से अनुरोध कर नरवाना में 220 केवी.ए. का बिजली घर बनवाया। इस बिजली घर में बिजली की सप्लाई

सीधे पानीपत थर्मल और भाखड़ा बांध की परियोजना से होती थी। इस बिजली घर से ही हिसार, सिरसा और कैथल को बिजली उपलब्ध करवाई। हालांकि उस वक्त बिजली की खपत आज की तुलना में थोड़ी कम थी। परन्तु मंत्री रहते हुए कभी बिजली की एवं सिंचाई मंत्री रहते हुए कभी पानी की कमी नही होने दी।

मित्रो! 1982-87 की योजना में वर्ल्ड बैक प्रोजेक्ट के अन्तर्गत हरियाणा सरकार के पास बहुत पैसा आया था। जिसे हमने हरियाणा के चहुंमुखी विकास के लिए प्रयोग किया था। इसी पैसे से हमने 1982-87 के दौरान यमुनानगर थर्मल प्लांट की आधारशिला रखवाई थी। इस अवधि में मेरे मंत्रालय से ही हमने भारत सरकार से रेल लाईन लिंक्स हेतु रेल मिनिस्टरी, कोयले के लिए कोल मिनिस्टरी के साथ कई एग्रीमेन्टस किए थे। हमने ही इस प्लांट की जमीन एक्वायर से लेकर लेवलिंग करने तक के काम को अपने निर्देशन में अंजाम दिलवाया। 1982-87 में ही मैंने पानीपत में 220 K.V.A. के दो अन्य बिजली घरों को शुरू किया।

मित्रो! नरवाना सरकारी हस्पताल केवल 50 बिस्तर का होता था मैंने इसे 100 बिस्तर का अत्याधुनिक हस्पताल बनवाया और अपने यहां कार्यकाल के दौरान मैंने सदैव विशेषज्ञ डॉक्टरों को यहां बनाए रखा था। नरवाना के नौजवानों के लिए खेल-अभ्यास हेतु मैंने स्टेडियम की आधार शिला रखवाई जिसे बाद में नरवाना की जनता ने इतना विस्तार दे दिया कि आज वह पूरे भारतवर्ष में तहसील स्तर का सबसे सुन्दर स्टेडियम है।

मित्रो! 1982-87 के कार्यकाल में ही मैंने नरवाना में मॉडल टाऊन बनवाया। हाऊसिंग बोर्ड बनवाया जो बस स्टैण्ड और शहर के बीच स्थापित है। तब बंसीलाल जी रेलमंत्री होते थे उनसे

दरख्वास्त करके मुख्य प्लेटफॉर्म को बड़ा बनवाया तथा प्लेटफॉर्म नं 2,3,4 को नया बनवाया। दोनों प्लेटफार्मों पर लम्बे-लम्बे शैड भी बनवाये। माल उतारने और चढ़ाने के लिए एक बहुत बड़ा माल गोदाम बनवाया। नरवाना में ही बफर स्टॉक बनवाए गए, जिनमें सीमेंट लोहा और खाद का स्टॉक से माल, खनौरी, पातड़ा, संगरूर, पटियाला तक जाता था। उन स्थानों का माल ट्रकों से यहां लाया जाता था। तथा नरवाना से ट्रेन में चढ़ाकर देश के दूसरे प्रान्तों में भेजा जाता था

मित्रो! मैंने नरवाना में नई आनाज मंडी का निर्माण करवाया तथा चार अन्य सब पस्टेज सैन्टर धनौरी, गढ़ी, धमतान साहिब एवं नरवाना में बनवाए इलाके के बहुत सारे लिंक रास्तों को पक्की सड़क के रूप मे पक्का किया गया और इसके साथ-2 मैंने धनौरी धमतान, अमरगढ़ एवं उझाना गांवों में सी.एच.सी. सैन्टरों का निर्माण करवाया ताकि लोगों को अपने गांव में ही स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिल सके।

मित्रो! मैंने नरवाना क्षेत्रा की सभी शिक्षण संस्थाओं जैसे आर्य स्कूल, एस . डी. स्कूल, आर्य कन्या स्कूल, कन्या गुरूकुल खरल आदि में सदैव उनके अनुरोध पर खुले दिल से सहयोग किया है चाहे वह कमरों के निर्माण रूप में हो या अन्य ग्रान्टों के रूप में। नरवाना की पब्लिक धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, पंजाबी धर्मशाला, ब्राहमण धर्मशाला या अन्य समुदायों की धर्मशाला, मेरी कोशिश रही है कि छतीस बिरादरी की सभी धर्मशालाओं और चौपालों में अपना थोड़ा बहुत योगदान जरूर डालूं और मैंने कभी किसी को मना भी नही किया।

मित्रो! इस बीच में मै राज्यसभा में चला गया था। वहां

मैंने संसद में किसानों के मुद्दों को उठाया तथा नेताओं से गुहार लगाई कि उन्हें नीतिगत फैसलों में किसान के हितों का भी ख्याल रखना चाहिए।

इसके बाद 2005 में मैं कैथल क्षेत्र का विधायक बन गया था। तब मैंने कैथल के विकास के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं का शुभारम्भ किया मसलन सुपर स्पेशिलिटी मल्टीपरपज हस्पताल, खेल स्टेडियम, नया बस स्टैण्ड, ड्राईविंग कॉलेज रेलवे ओवर बिज, सीवरेज ट्रीटमैन्ट प्लान्ट आदि। हमने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नाम से एक सरकारी कॉलेज का भी निर्माण भी करवाया तथा पूरे कैथल शहर के सौंदर्यकरण के लिए प्रयास किए। यह अपने आप में एक ऐतिहासिक तथ्य है कि कैथल के निर्माण से लेकर आज तक ब्रह्मतलाब मेरे और रणदीप के विधायक बनने तक जो इतने विकास कार्य कुल मिलाकर भी नहीं होते जितने की पिछले आठ वर्षों के दौरान हुए हैं।

अतः मैं अपने पूरे राजनीतिक सफर पर जब दृष्टिपात करता हूं तो लोगों द्वारा दिए गए सहयोग एवं अपने द्वारा किए गए कार्यों से एक सन्तुष्टि महसूस करता हूं

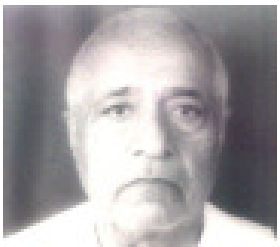

शुभ-संदेश

-चौ. बलवन्त सिंह सुरजेवाला

आदरणीय बड़े भाई साहब चौ. शमशेर सिंह सुरजेवाला मुझसे तीन वर्ष बड़े हैं। मेरा रुझान शुरू से ही खेती-किसानी में रहा है इसलिए मेरा मन पढ़ाई लिखाई में कम ही लगता था। हांलाकि बड़े भाई साहब ने मुझे पढ़ाने के लिए बहुत जोर लगाया। वे मुझे अपने साथ जीन्द जाट स्कूल में भी लेकर गए। तब वे दसवी कक्षा में और मै छटी कक्षा मैथा। दसवी पास कर भाई साहब रोहतक चले गए और में वापिस नरवाना वाले स्कूल में आ गया। यह सब कुदरत का ही कमाल था कि भाई साहब की रूचि पढ़ाई एंव राजनीति में बढ़ती गई जबकि मेरी रूचि जमींदारा में रमने लगी। मुझे बड़े भाई की शादी शानो-शौकत का आज भी अच्छे से स्मरण है। उनकी बारात में तीस कारों का काफिला था। जबकि पूरे नरवाना क्षेत्रा में केवल तीन कारें थी। एक तो लाला मिठ्ठन लाल कारखाने वाले के पास, दूसरी चौ. देवी चन्द डूमरखां के पास और तीसरी हमारे पास। मेरी रूचि राजनीति में अधिक नही थी परन्तु फिर भी भाई साहब ने हमें राजनीति के रथ की सैर करवाई। उन्होनें मुझे 1972-88 तक लैंड मोर्टगेज बैंक का डायरेक्टर बनवाया तथा 1978-88 तक मै गांव ़दसुरजाखेड़ात्रः के सरपंच पद पर भी रहा जो उनकी ही इच्छा का

परिणाम था। अतः मैं कह सकता हूँ कि बड़े भाई साहब ने एक योग्य पुत्र और भाई के सभी दायित्वों को बड़ी जिम्मेवारी से निभाया है। इनकी काबिलियत पर मुझे भी अपने परिवार और और गांव-समाज के साथ बड़ा फख्र है परम-पिता परमात्मा से उनकी लम्बी आयु और अच्छी सेहत के लिए प्रार्थना करते हुए उनकी आत्मकथा के प्रकाशन हेतु पूरे परिवार के साथ उन्हें बधाई प्रदान करता हूँ।

आपका अनुज,

-चौ. बलवन्त सिंह सुरजेवाला

बाप के समान हैं मेरे लिए बड़े भाई साहब!

-चौ. बरजिन्द्र सिंह सुरजेवाल

आदरणीय बड़े भाई चौ. शमशेर सिंह सुरजेवाला का मैं छोटा भाई हूँ यह मेरे लिए बड़े गर्व की बात है। यह उनकी शख्सियत का ही कमाल है कि गांव की चौपाल से लेकर विधानसभा हरियाणा तक मे उनकी साफगोई, स्पष्ट वक्तृत्व कला और जुबान के धनी होने के तथ्य को स्मरण किया जाता है। उन्होंने अपने निजी जीवन अथवा राजनैतिक लाभ के लिए कभी भी मिथ्या संभाषणों का सहारा नही लिया वो हमेशा सीधी बात करते है, सच्ची बाते करते है वे किसी बात को मना करते है तो बिना किसी टाल-मटौल करने मे विश्वास नही करते अपितु बड़े सहज भाव से समझाते हुए कह देते हैं 'बीर ये मेरे बस का नही है।' बुजुर्ग आज भी उनकी शैली के कायल है। मेरे लिए तो बड़े भाई साहब बाप के समान रहे है और मैंने हमेशा उनको आदर भी इसी दृष्टि भाव से दिया है। क्योंकि मेरी आयु और बड़े भाई साहब की उम्र में पूरे सोलह वर्ष का अंतराल है। इनकी शादी में मेरी आयु केवल आठ मास की ही थी। मेरी जन्म तिथि है, 10 सितम्बर 1948। कक्षा छठी से लेकर बी.ए. तक का अध्ययन मैंने बड़े भाई साहब के निर्देशन में ही किया। उनकी यह सोच थी कि हम खूब पढ़े-लिखें और उच्च शिक्षा प्राप्त करें इन्ही के सान्निध्य मे हमने नियमित अखबार पढ़ना सीखा तथा अंग्रेजी के अखबार की आदत डाली। हमारी कोई स्पेलिंग गलत

होती थी तो बड़े भाई साहब से ही दुरुस्त करवाते थे। सामाजिक मेल-जोल, सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रम एंव काम से काम रखने का गुण मैंने बड़े भाई साहब से ही सीखा है। 1967-68 के चुनावों में मैंने भी बड़े भाई-साहब के चुनाव अभियान में सक्रिय भाग लिया था। यह मेरा चुनाव का पहला अनुभव था। मेरे जिम्मे पर्चियां बनाने से लेकर पम्फलैट बनवाने, बंटवाने और पोस्टर चिपकाने तक के कार्य थे। खूब एन्जाय किया था मैंने अपने लड़कपन के उस चुनाव कार्य में। और परमात्मा की कृपा से उस चुनाव में जीत भी मिली थी इसलिए भी परिश्रम का फल ज्यादा आनंद प्रदान करने वाला था। 1974 में लॉ करने के बाद बड़े भाई साहब के आदेशानुसार ही मैंने जीन्द कचहरी में वकालत की प्रैक्टिस शुरू की तथा वकालत के गुर भी उन्ही से सीखे। 1973 में बड़े भाई साहब हिन्दुस्तान-रूस-मैत्री संघ के हरियाणा प्रांत के 'जनरल सेक्रेटरी' थे तब मैंने इनके निर्देशन में कु.वि.कु. इण्डो-सोवियत-कल्चरल सोसायटी की एक यूनिट का गठन भी किया था, तब मै लॉ तृतीय वर्ष का विद्यार्थी होता था। तब 1973 में ही बड़े भाई साहब ने मुझे इसी सोसायटी के तत्वाधान में पन्द्रह दिनों के लिए 'रसिया' की यात्रा पर भिजवाया था। यह मेरे जीवन की पहली विदेश यात्रा थी। 1958 में मैंने बड़े भाई साहब की इच्छा से अपना निजी व्यवसाय गंगा सिंह सतपाल के नाम से शुरू किया और पिछले 27 वर्षों से हम अपने पूज्य पिताजी चौ. गंगा सिंह जी और भाई साहब के आदर्शों और उसूलों के अनुरूप कार्य करते हुए जनता के विश्वास पर पूरे खरे उतरते आ रहे है और परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना करते है कि हम अपने परिवार की साख को बनाए रखें। आदरणीय बड़े भाई साहब का जीवन सफर अपने आप में एक खुली

किताब है। मुझे नही लगता की शायद ही कोई ऐसा पल या अवसर हो जिससे इनका परिवार, इनके मित्रा या इनके कार्यकर्ता उससे ना वाकिफ हो। परमात्मा इनको दीर्घायुष्य प्रदान करें और सद्स्वाथ्य प्रदान करें।

अनुज,

चौ. बरजिन्द्र सिंह सुरजेवाल

094161-08283

सुदीप सुरजेवाला

मेरी इतनी बड़ी शख्सियत नहीं कि मैं ताऊ जी के राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डालूं। पारिवारिक तौर पर मेरे पिता जी के देहावसान के पश्चात ताऊ जी ने मुझे माता-पिता के समान प्यार दिया और कभी भी पिता जी की कमी को महसूस नहीं होने दिया। इन सबसे बढ़कर मुझे मेरी जिम्मेवारियों का अहसास करवाया और आज मैं मेरी माता जी, मेरी धर्मपत्नी व बड़े भाई श्री रणदीप सिंह का यदि विश्वास हासिल कर सका हूं तो वह केवल और केवल ताऊ जी के स्नेह व आशीर्वाद की बदौलत ही कर सका हूं। इतनी बड़ी राजनीतिक शख्सियत होने के बावजूद परिवार को एकसूत्र में पिरोकर रखना व परिवार के लिए भरपूर समय निकालने की महारत में ताऊ जी का सानी नहीं है। मेरा प्रयास रहता है कि मैं ताऊ जी के कदम चिन्हों का अनुसरण करूं लेकिन जितने सरल तरीके से ताऊ जी जीवन जीते है मुझे यह सरल तरीका उतना ही कठिन प्रतीत होता है।

सुदीप

पुत्रान् स्व. श्री जगदीप सुरजेवाला

Vikas Surjewala

Ch. Shamsher Singh Surjewala, a well known and renowned name in Haryana has come in with a lot of hard work, struggle and dedication. Belonging to an agricultural family and then establishing himself as a successful lawyer and then making a place for himself in the political field is highly commendable.

He is a born leader fighter and winner. So with an aim to do something great for the country, he entered Politics at an early age, he fought for the cause of the peasants farmers and the down trodden. He has always been an inspiring & guiding force to me. I have always looked upto him and learnt to come out victories from any hard situations.

He is a role Model for Younger Generation who can learn to work hard and achieve their aim and goals in life easily. He believes simple living and high thinking.

-VIKAS

S/o Late Sh. Harbeer Surjewala

दादा जी की शख्सियत का फैन हूं मैं!

-जगरूप सुरजेवाला

अपने जीवन और मेरी कार्यशैली पर मैं आदरणीय दादा जी साहब की छाप को स्पष्ट रूप से महसूस करता हूँ। क्योंकि मैं उनकी स्पष्ट वक्तृत्व कला, सीधी और खरी बात कहने की आदत और उनके खाने-पीने एंव पहनने-ओढ़ने तक की आदतों को अपने जीवन में सीधे-सीधे प्रभावी तौर पर महसूस कर सकता हूँ।

1963-64 के दौरान जब मैं दसवीं कक्षा का छात्रा था, तभी से आदरणीय दादा जी के दैनिक सम्पर्क में आया और उनकी शख्सियत से बेहद प्रभावित हुआ। उन दिनों दादा जी नरवाना में वकालत करते थे और आर्य उप नगर में रहते थे। तब मैंने एक माह तक उनके मुंशी के रूप में काम किया था और और उनके वकालत संबंधी ज्ञान और प्रसिद्धि को जानने का मौका मिला। उसी दौरान मुझे दादा जी द्वारा संपादित एक समाचार पत्रा 'तरूण-हरियाणा' की गतिविधियों में भी शामिल होने का मौका मिला। 1967 के चुनाव में ही इन्होंने अपने नेतृत्व कौशल को साबित कर दिया था। 1968 से 2009 तक इन्होंने अनेकों चुनाव लड़े जिनमें हमने सक्रिय सहयोग का निर्वाह किया और भिन्न-भिन्न ड्यूटियों से अलग-अलग अनुभव और तजुर्बा सीखने को मिले। आदरणीय चौ साहब ने बिना किसी प्रलोभन और महत्वाकांक्षा के अपनी पार्टी के लिए तथा अपने साथियों के लिए कार्य किया है। इनके सान्निध्य में मैंने सदैव कुछ न कुछ नया सीखा है। जो अनेकों बार मेरे जीवन में लाभदायक सिद्ध

हुआ है। आपने सदैव गरीब, निर्धन किसान एंव मजदूर वर्ग के हितों की लड़ाई लड़ी। यह आपकी सोच और और कार्यशैली का ही परिणाम है कि आज सुरजेवाला परिवार को राष्ट्रीय स्तर पर एक मुकम्मल पहचान प्राप्त हुई है। और यह प्रभु की अपार अनुकम्पा है कि आपकी कृपा से हमे आपके जैसा ही सर्वगुण-सम्पन्न पुत्र-रत्न रणदीप के रूप में प्राप्त हुआ है। अतः परिवार की कीर्ति में एक और चाँद आपकी पुस्तक के प्रकाशन के रूप मे लगने जा रहा है। अतः आपको बधाई। परम पिता परमात्मा से आपके दीर्घायु एंव सद् स्वास्थय की कामना करते है।

बधाई सहित ।

जगरूप सुरजेवाला

94160-61597

अपने नेता का विश्वास और भरोसा कमाया है मैंने

-ला. लक्ष्मणदेव आर्य

1961 मैं शमशेर सिंह जी ने पंचायत समिति कलायत का चुनाव लड़ा और चैयरमैन बने। मैंने भी को. ऑपरेटिव सोसायटी का चुनाव लड़ा था और कलायत समिति का सदस्य चुना गया।

हरियाणा सरकार ने पहली बार पंचायत समितियों का गठन किया था और यह प्रचार था कि ये समितियां मिनी असेम्बली होगी। और जगह क्या हुआ पता नहीं पर कलायत समिति को चौधरी साहेब ने असेम्बली का स्वरूप देने का जरूर प्रयत्न किया। पोजीशन और अपोजीशन के अलग-अलग बैंच लगाए गये जहां असेम्बली की तरह एजेण्डे पर बहस होती थी।

आर्य उपनगर नरवाना में मेरा मकान था। चौधरी साहेब मेरे मकान के सामने के मकान में रहते थे। उन के पास फिएट गाड़ी थी। मुझे घर से बुला कर ले जाते और लाते थे। महीने में दो-तीन बार मिटिंग होती थी।

समिति में अपोजीशन के लीडर श्री बलदेव व कृष्ण भाणा वाले होते थे। मैं भी अपोजीशन बैंचों पर बैठा करता था। और चौधरी साहेब के कार्यों की आलोचना करता था। मैं सोचता रहता कि ये कैसे इंसान है। मैं मिटिंग में इन का विरोध करता हूँ। ये मुझे घर से बुला कर मिटिंग में ले कर आते है। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन दिनों सीमेंट की भारी किल्लत थी। सीमेंट के परमिट पंचायत समिति दिया करती थी। इन्होंने मुझे परमिट कमेटी का इंचार्ज बना दिया।

एक दिन कचहरी से नरवाना नहर की पटरी से आ रहे थे

इकट्ठे क्यों नहीं चल सकते(क्या दिक्कत है? मेरे मन में पहले ही मंथन चल रहा था। मैंने कहा ठीक है आप हमारे नेता और मैं और हमारे साथी आप के कार्यकर्ता। वह 1961 का वर्ष था और आज 2012 का साल है। हम ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस दौरान कितने उतार-चढ़ाव आये। चौधरी जी 1967 में नरवाना से असेम्बली से चुनाव जीत कर को. ऑपरेटिव मंत्री बने। मुझे जिला को.ऑपरेटिव बैंक का मैम्बर नोमीनेट करके चेयरमैन बना दिया।

1982 में चौधरी जी नहर बिजली के मंत्री बने मुझे हरियाणा बिजली बोर्ड का सदस्य बना दिया। 1987 में कांग्रेस बुरी तरह से हार गई नरवाना से भी कांग्रेस की हार हुई। विरोधियों ने रात को मेरे घर के शीशे तोड़ दिए। एम.एल.ए. के जुलूस में मेरे खिलाफ नारे लगाये 'लक्षमण दिखाओ पाँच हजार रुपया पाओ' मैं अगले दिन सुबह नहा-धोकर नरवाना के चौपड़ा चौक में गया वहां बहुत से व्यक्ति बैठे हुए थे जो सभी कांग्रेस विरोधी थे। मैं उन के बीच जाकर खड़ा हो गया और कहा मैं आ गया हूँ पाँच हजार रुपया लाओ। तब सभी लोग हँसने लगे और कहने लगे कि वह तो जलूस की बात थी। अब हम सब भाई-भाई हैं। इस तरह जीवन में कितनी खट्टी मीठी घटनाएं घटती रही।

1991 में नरवाना से विधान सभा का चुनाव जीत कर चौधरी जी फिर नहर बिजली के मंत्री बन गए। मैं एक घटना को कभी भूल नहीं पाऊँगा। चौधरी जी ने हरियाणा राजभवन में मंत्री पद की शपथ ली मैं भी वहां मौजूद था। समारोह समाप्ति पर मैं हरियाणा भवन के गेट से निकल रहा था कि चौधरी जी का भेजा हुआ पुलिस का एक आदमी मेरे पास आया और कहने लगा आप को साहेब बुला रहे है।

मै गया चौधरी जी मुझे अपनी गाड़ी में बिठा कर कोठी में ले गये वहां जा मैरे हाथ में एक लिस्ट थमा दी लिस्ट में 45 बोर्ड और कॉर्पोरेशनों के नाम थे। मुझे कहने लगे इन में से तुझे कौन सा चैयरमैन बनना है पसंद कर लो। मैइन के इस स्नेह भरे व्यवहार को देख कर अचम्भित रह गया। मुझे कुछ भी नही सूझा और कहा विचार करके बताऊँगा।

नरवाना आकर मैंने इस बारे में काफी मंथन किया। और निर्णय हुआ कि चेयरमैन नही बनना। और मेम्बर बिजली बोर्ड बना सके तो ठीक(नहीं तो इसी तरह ठीक। मेरे निर्णय से चौधरी जी को दुख हुआ मुझे श्री रणदीप ने भी कहा कि आपको चेयरमैन बनना चाहिए। पर मेरी नादानी या कमजोरी कुछ कहें मै अपनी जिद्द पर अड़ा रहा। एक माह तक फैसला लटका रहा। अंत में मै श्री रणधीर सिंह नैन एडवोकेट को लेकर चौधरी से मिला। नैन ने कहा कि क्यों इसके साथ धक्का करते हो। तब मुझे बुलाकर बिजली बोर्ड का चेयरमैन बनाया और कैथल के स्लेटी जी को चेयरमैन बनाया गया। इसी तरह एस.एस. बोर्ड का मैम्बर बनाने पर मुझे कहा गया तब भी मैंने बिजली बोर्ड में जाने को कहा।

1993 में चौधरी जी राज्य सभा में गए तो मुझे हरियाणा टेलीफोन एग्जेंकरी का सहायक बनाया गया मुझे पी.सी.सी. सदस्य बनाया। इस तरह चौधरी जी के हर कदम से मेरे पर प्रेम झलकता है। काफी लोग कहते है कि तेरे बाद आने वाले व्यक्ति धनवान हो गए तुमने कुछ नही कमाया। मै कहा करता हूँ मैंने अपने नेता का विश्वास और भरोसा कमाया है जो बहुत कम व्यक्तियों को हासिल होता है।

अंत मे परमात्मा से प्रार्थना है कि इन की आयु लम्बी करे और इन की रहनुमाई और नेतृत्व का काम हमें और जनता में मिलता रहे।

-लाला लक्ष्मणदेव आर्य, नरवाना

खुशमिजाज और घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के हैं सुरजेवाला साहब!

-विनोद गर्ग

आदरणीय शमशेर सिंह सुरजेवाला के सान्निध्य में मैं वर्ष 1967 के उनके पहले चुनाव से ही हूँ। मुझे इस बात का बड़ा गर्व कि वे मुझे अपना पारिवारिक सदस्य मानते हैं।

फुर्सत के पलों में जब भी चौ. साहब को कहीं घूमने जाना होता तो उस योजना की सबसे पहली कॉल मेरे पास आती और हम लोग तुरंत आनन-फानन में निकल पड़ते। कभी शिमला, कभी कलकत्ता कभी मंसूरी, कभी वैष्णो देवी, कभी मुंबई। चौ. शमशेर सिंह सुरजेवाला बड़े खुशमिजाज, घुमक्कड़ी प्रवृति के खाने-पीने और ओढ़ने-पहनने के बड़े शौकीन तबीयत के मालिक हैं। सफाई पसंद तो इतने है कि पूछिए मत। अपनी कार की सफाई खुद ही पाईप उठाकर कर लेते थे। एक बार दिल्ली के एक आलीशान होटल में खाना खाते वक्त उनकी वास्कट पर थोड़ी सब्जी गिर गई थी। वे बाथरूम गए और इतने सलीके से वास्कट को साफ करके ले आए कि पता भी नहीं चला कि कहां क्या गिरा था? हंसी मजाक और हाजिर जवाबी में चौ. साहब का कोई जवाब नहीं। वे बड़ी सरलता से ऐसा गुदगुदाने वाला जवाब देते है कि सुनने वाले बरबस ही मुस्कुरा पड़ते हैं। एक बार हम चौ. साहब के साथ घूमने के लिए कलकत्ता गए हुए थे तो अचानक नखवाना के ही लाला कली राम मित्तल से भी वहीं मुलाकात हो गई। सब बड़े खुश थे

और हैरान भी। चौ. साहब ने पूछा- 'हां भई कली राम! कहो कहां से आ रहे हो?' लाला कली राम बोले-'बस यही था चौ. साहब काली माता के दर्शनों से आ रहा हूँ। (लाला कली राम थोड़ा काले रंग के आदमी हैं)। चौ. साहब तुरंत बाले-' फेर तो भाई काली माता नै देखते ही कह्या होगा(आ रे भाई तूं कड़ै था ईब तक। इतना सुनते ही सब पेट पकड़-पकड़कर हंसने लगे। मित्रों से मिलने और पार्टियां अरेंज करने में उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। वे प्रत्येक शुक्रवार की सायं नियमित रूप से चण्डीगढ़ से आते थे और किसी न किसी मित्रा के यहां गैट-टू-गैदर पार्टी करते। इस प्रकार वे सब यार दोस्तों को जोड़े भी रखते और स्नेह भी बना रहता।

वकालत के दिनों में चौ. साहब कचहरी से आने के बाद स्नानादि से निवृत होकर डा. उतम सिंह की दुकान पर अपने यारों का मजमा लगाते और उर्दू का अखबार पढ़कर सुनाते। चौ. साहब को ठण्ठ से बड़ी एलर्जी है। एक बार हम (1982 में) वैष्णो देवी माता के दरबार में गए। मैं, चौ. साहब, स्व. जगदीश राय अग्रवाल, स्व. लाजपत राय जैन उर्फ सेम। वहां पर ठण्ड तो पड़ती ही है ये तो कोई बताने वाली बात ही नहीं है। हमने जैसे ही नहाने के लिए कपड़े उतारे तो अचानक इतनी ठण्डी हवा का झोंका आया कि चौ. साहब को फौरन एलर्जी हो गए और हम लोगों को बिना स्नान और बिना दर्शन के तुरंत प्रस्थान करना पड़ा। इसलिए चौ. साहब सर्दियों में खूब गर्म कपड़े पहने दिखाई देते हैं।

चौ. साहब दया, करूणा, स्नेह और सहयोग के तो बड़े विशाल भण्डार है। हर पल गरीब की सोचते है और उस की मदद को हर पल तैयार रहते है। चौ. साहब पढ़े-लिखे, विद्वान लोगों का बहुत आदर करते है और स्वयं भी विद्वान लोगो की संगति में रहना पसंद करते है। एक बार उन्होंने हिसार कॉलेज की कनवोकेशन प्रोग्राम में विद्यार्थियों को डिग्रियां बांटते हुए अपने भाषण में ये बात कही भी थी कि ये डिग्रियां हम जैसे नेताओं की बजाए किसी ज्ञानी-ध्यानी विद्वान प्रोफेसर या शिक्षको से बंटवाई जानी चाहिए।

चौ. साहब ने एक साधारण किसान परिवार मे जन्म लेकर अपनी लग्न, परिश्रम और तप के बलबूते पर अपने व्यक्तित्व को इतना बुलंद किया कि आज पूरे भारत वर्ष मे उनके नाम और काम की प्रसिद्धि है। एक जमाने में आप विधानसभा के बड़े सभ्य शालीन और वाक्पटू कला में पारंगत वक्ता माने जाते थे। आपके नक्शे कदम पर चलते हुए आपके पुत्र रत्न ने आपकी कीर्ति मे चार चाँद लगा दिए है और सुरजेवाला परिवार की ख्याति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक स्थापित करने की क्षमता रखते है। आप गांधी परिवार के निकटतम सहयोगियों मे से एक और हरियाणा के सबसे वरिष्ठ कांग्रेसी नेता हैं।

अन्त में मै चौ. सुरजेवाला के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ।

-विनोद कुमार गर्ग

नरवाना

94160-61484

महान शख्सियत का साथ सौभाग्य की बात

-विजय सांगवान

महान व्यक्तित्व, कोमल हृदय गरीब और कमजोर के साथी चेयरमैन, भारतीय किसान खेत मजदूर कांग्रेस चौ. शमशेर सिंह सुरजेवाला जी, उस शख्सियत का नाम है जो जन कल्याण के लिए पूरा जीवन संघर्षरत रहे है। खासकर किसान, खेतीहर मजदूर, छोटे व्यापारी और कमजोर वर्ग के हिमायती रहे है चाहे उनको न्याय दिलवाने के लिए अपनी ही सरकार के विरू) लड़ना पड़ा हो जनहित के लिए बुलंद आवाज के साथ लड़े है। आज भी परिवार शुभचिंतक और डॉक्टरों की मर्जी के विरु) अपनी सेहत की परवाह ना करते हुए चाहे गुजरात की डांडी यात्रा हो किसान मजदूर के हक की बात हो पूरे भारतवर्ष में लोगों को अपने हक के लिए लड़ने की प्रेरणा देते है। और नौजवानों को देश की बुलंद आवाज बनने के लिए प्रेरित करते है, मैंने एक बार चौ. साहब से अनुरोध किया की अब आपको आराम ज्यादा करना चाहिए, तो उन्होंने कहा-भाई शरीर का कोई भरोसा नही कब साथ छोड़ दे इसलिए मै अपना जीवन पूरी तरह से जन कल्याण में लगाना चाहता हूँ।

चौ. साहब जब भी चण्डीगढ़ पहुँचते है तो उसी वक्त मुझे रास्ते से ही टेलीफोन कर मिलने के लिए बुला लेते है, मै तुरंत सभी काम छोड़ उनको मिलने पहुँच जाता। चौ. साहब हमेशा जन कल्याण की ही बात करते है जिससे मुझे बड़ी खुशी मिलती,

परिवार के अलावा चौ. साहब खाली वक्त मिलते ही राजनीति, देश भक्ति और हंसी मजाक से सम्बन्धित फिल्म देखना पसंद करते है जिसके बारे में कम ही लोग जानते है मुझे भी चौ. साहब ने अपने साथ किसान खेतीहार मजदूर व अन्य कमजोर वर्ग के उत्थान के प्रति संघर्ष करने हेतु प्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप मैंने स्वेच्छा से वर्ष 2010 में 11 वर्ष पूर्व हरियाणा सरकार से सेवा निवृत्त हो चौ. साहब के साथ उनके मार्गदर्शन में हरियाणा जन सेवा में लग गया। चौ. साहब ने जन कल्याण के प्रति मेरी मेहनत और लगन को देख मुझे अगस्त 2010 को हरियाणा किसान खेत मजदूर कांग्रेस का प्रांतीय संयोजक नियुक्त कर दिया जो मेरे लिए बड़ी सौभाग्य की बात थी।

एक बार मई माह के दौरान मैं चौ. साहब गाड़ी से दिल्ली जा रहे थे मैं भी उनके साथ था। उन्होंने कुछ लोगों को खेतों में चिल चिलाती धूप में काम करते देख ड्राईवर से उनके पास गाड़ी रोकने को कहा, मैंने कहा चौ. साहब बाहर बहुत गर्मी है लू चल रही है तो उन्होंने सहजता से कहा उन्हें देखो जो धरती का सीना चीर चमकती धूप में देश के लिए अनाज और सब्जियां पैदा कर रहे हैं।

इनको अभी मेहनत का पूरा हक दिलवाना बाकी है, इसलिए हमें गर्मी की परवाह नहीं करनी चाहिए यह कह कर गाड़ी से उतर गए और किसानों की पूरी बात सुनी और समझी। उन किसानों की बात सुन वह बड़े दुखी हुए और तुरंत इस सम्बन्ध में

कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी से मिलने का वक्त मांग लिया। ऐसे कोमल हृदय व्यक्तित्व को मैं सत-सत प्रणाम करता हूँ

विजय सांगवान

093161-31225

विकास पुरुष है सुरजेवाला

-ईश्वर नैन

चौ. शमशेर सिंह सुरजेवाला जी एक धनी व्यक्तित्व के व्यक्ति है। बचपन से ही कामरेड प्रवृति के व्यक्ति रहे है। जब पहली बार आठवी कक्षा में दाखिल हुए तब से ही वो सामाजिक बुराईयों के खिलाफ व सामाजिक कार्यों के प्रति व समाज के विकास के लिए आवाज बुलंद करनी शुरू कर दी और इस सिलसिले में उन्हे कक्षा से बाहर होना पड़ा। लेकिन उन्होंने संघर्ष जारी रखा। वे हमेशा समय के पाबंद रहे और उन्होंने कभी किसी को इंतजार नही करवाया। वे हमेशा जनसभा, मिटिंग, चुनाव रैली में हमेशा समय पर जाते है। चौ. साहब सरदार हरिकिशन सुरजीत सिंह को अपना आदर्श मानते थे। चौ. साहब जब भी किसी स्कूल व कॉलेज में दाखिला लिया हमेशा अकेले जाकर चाहे वह दसवी, 12वी या बी.ए., एल.एल.बी. हो। कभी भी अपने पिता व किसी साथी को लेकर नही गए क्योंकि उन्हे अपने आप में पूर्ण विश्वास था। चौ. साहब ने कभी भी जिंदगी में झूठ नहीं बोला और ना किसी को गुमराह किया। हमेशा स्पष्टवादी रहे और ना किसी गरीब आदमी की आत्मा को ठेस पहुँचाया। हमेशा गरीब आदमी के साथ लेकर चले और हमेशा अपने वर्कर का कार्य जी जान से किया। समाज के विकास और राजनैतिक विकास के मामले में नन्हाना हल्का को एक अलग पहचान दी व राजनीति का गढ़ बनाया। जब पहली बार मंत्री बने तो उन्हे मर्सीडीज कार दी

गई लेकिन उन्होंने लेने से मना कर दिया और अम्बेसडर कार ली। उस पर ना तो कभी लाल बत्ती लगाई और ना कभी सरकारी झंडी लगाई। हमेशा सादेपन में रहे क्योंकि वे कामरेड प्रवृति के व्यक्ति है। उस जमाने में इतने पढ़े लिखे व्यक्ति होते हुए भी हमेशा गरीब आदमी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले। साफ छवि की राजनीति करके पूरे हरियाणा प्रदेश में एक अलग छवि के व्यक्तित्व कहलाए। हल्के व प्रदेश का विकास किया और विकास पुरूष के रूप में जाने गए। अगर कभी भी किसी मुख्यमंत्री से समझौता किया तो वह अपने स्वार्थ में नही बल्कि हल्के व प्रदेश के विकास के लिए किया।

चौ. साहब जब बिजली व सिंचाई मंत्री थे तब हमेशा किसान, उद्योगपतियों को बिजली व पानी हर गाँव शहर में सुचारू रूप से दिया और नया हरियाणा बनाया। चौ. साहब हमेशा अपने दिल में एक बात सोचते थे कि हल्का व प्रदेश का विकास कैसे हो। उन्होंने स्कूल व कॉलेज बनवाए क्योंकि वह जानते थे कि प्रदेश का विकास शिक्षा से ही आगे बढ़ सकता है उन्हें पता था कि 21वी. शताब्दी में साईंस व कम्पयूटर का जमाना होगा क्योंकि वह दूरगामी व्यक्ति है। इसलिए उन्होने अपने बच्चों को भी कान्वैंट स्कूल में शिक्षा दी ताकि वह अंग्रेजी, साईंस व कम्पयूटर में परिपक्व हो सकें। उन्होंने बच्चों को कभी भी अपने पास नहीं रखा। वह उन्हें अच्छी शिक्षा देना चाहते थे। चौ. साहब हमेशा कहते हैं कि अंग्रेजी का अखबार पढ़ना चाहिए, अंग्रेजी अपने आप

आ जाएगी और आज उसी का परिणाम है कि उनके सुपुत्र श्री रणदीप रणदीप सिंह सुरजेवाला ऐसे व्यक्तित्व बने हैं कि वो देश का नेतृत्व कर सकते है।

चौ. साहब ने सत्ताकार में होते हुए भी व विपक्ष होते हुए भी गरीब किसान व गरीब मजदूरों की आवाज को बुलंद रखा। चौ. साहब इंदिरा गांधी, राजीव गांधी व सोनिया गांधी जी को नत्थाना लेकर आए और दिखाया कि गरीब का चूल्हा कैसे जलता है, गरीब की छत कैसी होती है। चौ. साहब ने हमेशा संघर्ष जारी रखा। वह किसानों के लिए कई बार जेल भी गए। एक बार मैं भी उनके साथ बुडैल जेल में रहा। वहां भी चौ. साहब ने गरीब किसानों व मजदूरों की मदद करने का पाठ पढ़ाया और कहा कि इस आवाज को हमेशा बुलंद रखो ताकि हमारा देश प्रगति करे। वो हमेशा एक ही बात कहते हैं कि किसान खुशहाल है तो देश खुशहाल है। चौ. साहब ने किसानों के लिए कई बार भूख हड़ताल व आंदोलन किए और कहा कि जब किसान को उचित दाम और खाद पर सबसिडी व सस्ती बिजली और तेल, पानी के सस्ते साधन उपलब्ध नहीं होंगे तब तक संघर्ष जारी रहेगा। गरीब मजदूर को उसकी मेहनत की सही मजदूरी नहीं मिलेगी तब तक गरीब व मजदूर की आवाज उठाते रहेंगे। चौ. साहब जब 2004 में विधायक बने और और अखिल भारतीय किसान खेत मजदूर के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। तब उन्होंने सोनिया गांधी जी व मनमोहन सिंह जी से व मुख्यमंत्री जी से मिलकर किसानों की गिरफ्तारी का काला कानून खत्म करवाया

और किसानों का कर्जा माफ करवाया। जो पूरे देश का लगभग 75 हजार करोड़ रुपए था। किसानों का को-प्रो. बैंकों के कर्ज का ब्याज माफ करवाया। चौ. साहब ने किसानों की जमीन की रॉयलटी का कानून बनवाया और जमीन के मुआवजे के रेट को बढ़वाया। चौ. साहब हमेशा कहते हैं कि जमीन हमारी मां है और मां को कभी बेचा नहीं जाता। तभी जाकर किसान को जमीन की रॉयलटी का कानून बनवाया। चौ. साहब ऐसे पहले व्यक्ति है जिसने कहा था कि किसान आत्म हत्या कर रहा है तब सभी ने कहा कि सुरजेवाला जी बूढ़े हो चुके हैं उनको आराम करना चाहिए। जब देश में किसानों की आत्म हत्या की जनसंख्या बढ़ने लगी तब जाकर सरकार व विपक्ष की आंखें खुली। उस समय सभी ने कहा कि सुरजेवाला जी सही कह रहे थे। तब जाकर सरकार ने किसानों का भला किया।

चौ. साहब हमेशा रिश्वतखोरी, मिलावट खोरी व भ्रष्टाचार के खिलाफ रहे वो तो हमेशा कहते है कि मिलावट खोरी को फांसी की सजा होनी चाहिए। सुरजेवाला जी ने कभी भी अंधविश्वास व पाखंड में विश्वास नहीं किया। वो हमेशा कहते है कि दुनिया में भ्रमण से ज्ञान मिलता है जो कि देश व प्रदेश की तरक्की में काम आता है। सुरजेवाला जी ने नरवाना हल्के को एक नई राजनीतिक पहचान दी जो कि राजनीतिक रूप से प्रदेश में राजनीति का गढ़ माना जाता है। सुरजेवाला जी हमेशा कहते है कि अपने वफादार वर्कर को अपने परिवार का सदस्य मानना चाहिए। सुरजेवाला जी

ने कभी भी अपने बड़ो से अपने पैरो के हाथ नही लगवाया। हमेशा उनसे आशीर्वाद लिया और अपने व्यक्तित्व को जिंदा रखा। सुरजेवाला जी की पहचान यह है कि वह बुद्धिमान, स्पष्टवादी व ईमानदार व्यक्ति है।

आज सुरजेवाला जी गांधी परिवार के पाँच व दस लोगो मे गिने जाते है। सुरजेवाला जी कांग्रेस पार्टी के वफादार नेता है। सुरजेवाला जी हमेशा कहते है कि ना मेरा कोई धर्म है ना कोई मेरी जात है। वो हमेशा 36 बिरादरी को साथ लेकर चलने वाले हैं और वे हमेशा विकास मे विश्वास रखते है। इसलिए उन्हें विकास पुरूष के रूप में जाना जाता है। हम सरकार से मांग करते है कि चौ. साहब को किसान रत्न की उपाधी दी जाएं। सुरजेवाला जी किसानो के मसीहा हैं और भगवान् से प्रार्थना करते है कि सुरजेवाला जी को प्रमात्मा लम्बी उम्र दे ताकि वे देश व प्रदेश का विकास मे और योगदान दे सके।

-ईश्वर नैन, दनौदा

मो. 94163-18008

ईश्वर की कृपा के समान है सुरजेवाला

-कविराज कैथल

ऋषि मुनियों की पवित्रा पावन कपिस्थल की ये जमीन आपके आगमन को इस तरह तरस रही थी जैसे कि मां कौशल्या की सूनी गोद लाडले को हिलोरे देने के लिए तरस रही हो, मानो भक्त केवट की नाव राम-चरण की स्पृश्यता को तरस रही हो, मानो की अकाल मैं सूखी धरती रिम-झिम करती घटाओं को तरस रही हो, मानो भूखा रोटी को तरस रहा हो। उसी मानिंद कैथल हल्का भी सुरजेवाला को तरस रहा था।

ईश्वरीय कृपा हुई सन् 2005 के प्रारंभ में हरियाणा विधान सभा के आम चुनाव में आपका आगमन धर्म-नगरी कैथल में हुआ और कैथल की जनता ने भी आपको अटूट विश्वास और बेशुमार प्यार देकर बहुमत से विजयी करवाया। बस फिर क्या था? कैथल की चारों दिशाओं में 'दीपावली' की तरह 'दीपक' जलाए गए, शिक्षा के क्षेत्रा में रोजगार उन्मुख संस्थाएं खोल कर बेरोजगार नवयुवकों का सहारा बने, विकास के कपाट खोलकर निरंतर निर्बाध बहती ये गंगा हर जन को सुखमय व समृद्धशाली बनाती रहेगी। आपका यश, तेज और ओज सर्वदा समाज को सुगन्धित करता रहेगा। आप युग प्रवर्तक हैं, भविष्य द्रष्टा है आप मृदु भाषी है कटु आलोचक नही, आप विराट् हृदय है, संकुचित नही, किसी से आपका वैमनस्य नही है दोस्ताना है। आप स्पष्टवादी है, किसी अन्य का मुखौटा नही है।

जनकल्याण आपका स्वार्थ नही है परमार्थ है। 'जन-हिताय जन सुखाय' मुख्य उद्देश्य है। आपकी सोच कदापि नकारात्मक नही रही, सकारात्मक है। आप गरीबों की झोंपड़ी में रोशनी चाहते है परन्तु अमीरों के भी खिलाफ नही है। आप किसान मजदूर की समृद्धि चाहते है लेकिन व्यापारी के खिलाफ नही है।

आप अपार शान्ति एंव क्रान्ति के साक्षात प्रतीक है। जिस पद पर रहे पद की प्रतिष्ठा व गरीमा बढ़ाई आपने अपने जीवन में अनिवार्य को स्वीकार्य माना।

मैं परम पिता परमात्मा से चरण-वंदना करता हूँ आप सर्वदा स्वस्थ रहें, प्रसन्नचित रहें। जन सेवा करने की उत्सुकता रहे और हमेशा हमारे आदर्श व धरोहर बने रहें।

-कविराज शर्मा, कैथल

094160-73564

गरीबों के पक्षधर हैं सुरजेवाला

-आर. के. मान

जन्मः- 24 मार्च 1932 को एक छोटे से गाँव सुरजा खेड़ा छ्द नरवानाऋ में चौधरी गंगा सिंह के घर किसान परिवार में जन्म हुआ।

शिक्षाः- प्राथमिक, माध्यमिक व उच्चतर परीक्षाएं पास करने के बाद बी.ए की परीक्षा पास की और उसके बाद वकालत की परीक्षा पास करके वकील बन गए। वर्ष 1957 से 1978 के बीच नरवाना, जीन्द, पंजाब एंव हरियाणा हाईकोर्ट चण्डीगढ़ में वकालत की प्रैक्टिस भी की थी लेकिन वकील का पेशा छोड़ते हुए उन्होंने राजनीति में कदम रखे।

रूचि व लक्ष्यः- किसान परिवार व देहात के गाँव में जन्म होने के कारण से सुरजेवाला जी, किसान, मजदूर, मध्यमवर्गीय दुकानदार व निम्न स्तर के कर्मचारियों की समस्याओं से भली-भान्ति परिचित थे और उन्होंने इस कमेरे वर्ग को की सेवा करके उनकी समस्याओं का निदान करने को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। वर्ष 1958-59 में जब किसान आन्दोलन चल रहा था तो उन्होंने किसानों की पीड़ा को दूर करने के लिए आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया, जिसके लिए उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। वर्ष 1997-98 में किसान आन्दोलन में चण्डीगढ़ गिरफ्तार हुए और वर्ष 1997-98 में ही एन.डी.ए. के शासन काल में किसान आन्दोलन में दिल्ली गिरफ्तार हुए। वर्ष 1981-84 तक हरियाणा कृषक समाज

के चेयरमैन भी रहे और प्रांत के कोने-कोने में जाकर किसान-मजदूर की आवाज बुलन्द की। किसान-मजदूर की आवाज बन चुके सुरजेवाला जी को अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की माननीय अध्यक्षा श्रीमति सोनिया गांधी ने उनको अखिल भारतीय किसान खेत मजदूर कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया।

कैथल विकास:- सुरजेवाला जी ने नरवाना विधान सभा क्षेत्र में तो विकास कार्य करवा ही रखे थे लेकिन ज्यों ही वर्ष 2005 में कैथल से विधायक बने तो कैथल में इतने महत्वपूर्ण विकास कार्य करवाए, जो पिछले 40 वर्षों में भी नही हुए थे और न ही शायद किसी ने सपने में भी सोचा होगा कि इतने विकास कार्य कैथल में होंगे, जैसे सुपर स्पैशलिटी मल्टीपरपज हस्पताल, खेल स्टेडियम, नया बस स्टैंड, ड्राईविंग कॉलेज, डा. भीम अम्बेडकर कालेज, रेलवे ओवर ब्रिज, सीवरेज ट्रीटमैंट प्लांट आदि प्रोजैक्ट चालू करना व कैथल की जनता को चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, पेयजल, नहरी पानी व अनय मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना और सड़कों को चौड़ा करके उनका सौन्दर्यीकरण करना व शहर और देहात में समान रूप से गलियों व नालियों का निर्माण करके पानी निकासी का उचित प्रबन्ध करवाना और शहर के वार्डों में व गाँव में सभी जातियों की चौपाल बनवाना। किसानों की समस्या को महेनजर रखते हुए जिन गाँव में ट्यूबवैल का पानी खराब है, वहां पर गुहना शेरगढ़ लिंक चैनल माईनर का निर्माण करवा कर चालू करवाना और हर रजबाहे की टेल तक नहरी पानी

पहुँचाया गया।

सुरजेवाला जी ने जहाँ किसान, मजदूर व छोटे दुकानदार, दिहाड़ीदार कर्मचारी की आवाज को बुलन्द किया है वहीं उन्होंने व्यापारी व आढ़ती के हितों की भी अनदेखी नही की है और समय-समय पर उनसे मिलकर उनकी समस्याओं को जोर-शोर से उजागर किया है और सम्बन्धित अधिकारी व राजनेताओं मंत्रियों को पत्रा व्यवहार करते रहे हैं।

अन्त में मेरी तरफ से मैं यही कहना चाहूँगा कि :-

जन हितैषी, हर दिल अजीज और प्रतिभावान है।
चान्द जैसा यश तुम्हारा, हर तरफ गुणगान है।
जिनकी रूचि जन-सेवा,दिल से खेती करने वाला है।
सबकी जुबां पर नाम जिनका, वो शमशेर सुरजे वाला है।

-आर. के. मान, कैथल
मो. 99916-77000

प्रेरणा और आदर्श के स्रोत है : सुरजेवाला

-अविनाश काकड़े

हम सभी किसानोके नेता आदरणीय शमशेर सिंह सुरजेवाला का जीवन-चरित्रा हम सब साथियों के लिए प्रेरणा और आदर्श का स्रोत होगा। हमारे नेता के कथनी और करनी में कोई भेद दिखाई नही देता जो आज के राजनैतिक परिवेश मे दुर्लभ गुण है। व्यक्ति और खासकर नेता की सफलता उसके पैसे, बंगले पदों से नही गिनी जा सकती तो उसका व्यक्तित्व संचय ही उसकी सफलता की निशानी है। इस सफलता से लबालब हमारे नेता अपने पद की चिंता किये बिना इस देश के पीड़ित और गूंगे किसानों की बुलंद जुबान है। किसान कौम की भलाई के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर फिर भी प्रसिद्धि परान्मुख (प्रसिद्धि से दूर) रहने वाले एक महर्षि हैं।

आज के नेता रिश्तेदारी, जाति, धर्म निभाने में ही धन्यता मानते है। उसी में अपनी सारी ऊर्जा लगाते है और सुरजेवाला जी हमारे जैसे सैकड़ो कार्यकताओं को कार्य का मौका देते है आपकी गुण ग्राहकता ने हम जैसे हजारो को वर्तमान राजनीति मे टिके रहने का कार्य करने का जौ मौका दिया है उसके हम सदैव ऋणी रहेंगें आपके महान त्यागमयी जीवन को मै अपने सभी साथियों और परिवार की तरफ से प्रणाम करता हूँ। साथ ही आपके शतायु होने की कामना करता हूँ।

अविनाश काकड़े

महाराष्ट्र

094221-47040

स्पष्टवादी राजनेता हैं सुरजेवाला

-सतीश बंसल

भारतीय गणराज्य के सपनों को साकार करने के संकल्प को मन में संजोए जिस दृढ़-प्रतिज्ञ युवा ने बीसवी शताब्दी के पचासवेदशक मेसार्वजनिक जीवन को अपनी कर्म-भूमि के रूप मे अपनाया था वह युवा इक्कीसंवी शताब्दी में हमारे बीच एक पथ-पदर्शक के रूप में कार्यरत कोई और नही हमारा अपना माननीय श्री शमशेर सिंह सुरजेवाला है।

माननीय श्री शमशेर सिंह जी सुरजेवाला आज भी युवा-मन,स्फूर्ति, कर्तव्यनिष्ठा तथा कर्तव्य परायण के प्रतीक है जिनके जीवन का लक्ष्य समाज के उस विपन्न वर्ग के हितो की लड़ाई लड़ना रहा है जिसे हम गांधी जी के अंतिम-व्यक्ति के रूप में परिभाषित करते है। आप सदैव एक बेबाक, दबंग, स्पष्टवादी राजनीतिज्ञ रहे है जिसने समाज की समस्याओं पर अपने विचार बेधड़क होकर प्रकट किए। वास्तव में आपने विचाररूपी शमशीर को कर्मों में डालकर अपने नाम को जीवन्त बनाए रखा है। आपने जिस कुशलता से सार्वजनिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन किया है और कर रहे है वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

किसान खेत मजदूर कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष की भूमिका में आप निरन्तर किसानो व मजदूरो के हितो की लड़ाई लड़ रहे है। जो जीवन के रण में दीप प्रजवलन्न की अभिव्यक्ति है। ऐसे महापुरूष को दीर्घायू की कामना सहित कोटि-कोटि नमन।